काला फूल

काला फूल

अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'ब्लैक ट्यूलिप' का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

मूल्य : बीस रुपये (20.00)

Abridged Hindi version of BLACK TULIP by Alexander Dumas

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

: 1 :
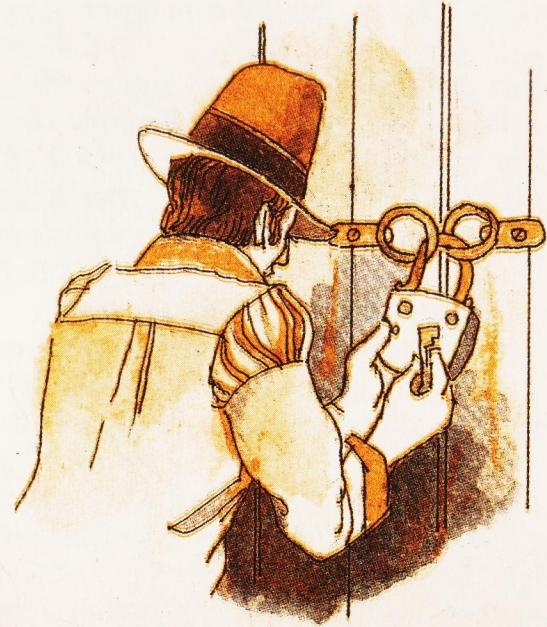
काला फूल

यह हालैण्ड की राजधानी हेग नगर की एक कहानी है। 20 अगस्त, सन् 1672 की बात है। उस दिन नगर की सड़कें लोगों की भीड़ से खचाखच भरी थीं। लोगों में कुछ बेचैनी और हड़बड़ी मालूम होती थी। सब न जाने किस बात से बहुत उत्तेजित थे।

वैसे यह बहुत शान्त नगर था। यहां के लोग बहुत भले थे और शान्तिपूर्ण जीवन बिताने वाले थे। लेकिन उस दिन सवेरे ही लोग न जाने किस बात पर उत्तेजित हो उठे थे। वे हाथों में तलवारें, कुल्हाड़ियां, लाठियां और छुरे लिए हुए दौड़े चले आ रहे थे। कुछ लोगों के पास पुराने ढंग की तोड़ेदार बन्दूकें भी थीं।

असल में बात यह थी कि नगर के बीचोंबीच स्थित 'बीतेन-होफ' नामक भयानक जेलखाने में हालैण्ड के प्रधान मंत्री जॉन-द-विट का भाई कार्नेलियस-द-विट हत्या के आरोप में कैद करके रखा गया था। उस भयानक जेलखाने का खण्डहर आज भी हेग नगर में विद्यमान है।

उस समय हालैण्ड कई प्रान्तों में बंटा हुआ था। इन प्रान्तों पर कई वर्षों तक जॉन और कार्नेलियस का शासन था। लेकिन जब से यह कहानी शुरू होती है उसके कुछ समय पहले फ्रांस के राजा लुई चौदहवें ने हालैण्ड पर आक्रमण किया और हालैण्ड

के डच-निवासियों ने अपने देश की रक्षा के लिए यह उचित समझा कि शासन-व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया जाए। उन्होंने जनतन्त्र को समाप्त कर दिया और ओरेज के राजकुमार विलियम को पूरे राज्य का प्रधान नियुक्त कर दिया। यही विलियम आगे चलकर इंग्लैण्ड के विलियम तृतीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह इंग्लैण्ड के चार्ल्स प्रथम का नाती और विलियम द्वितीय का पुत्र था।

कार्नेलियस उन दिनों हालैण्ड की विधानसभा का सदस्य था। उसने जनतन्त्र को समाप्त करने की योजना का विरोध किया। इसलिए लोग उसके विरुद्ध भड़क उठे। उसको कैद कर दिया गया। उस समय उसकी उम्र 49 वर्ष की थी। विलियम की उम्र उस समय 22 वर्ष की थी। कार्नेलियस का भाई जॉन उसका शिक्षक था। जब शासन-व्यवस्था बदली तो जॉन ने खुशी-खुशी नई व्यवस्था को स्वीकार कर लिया, लेकिन कार्नेलियस ने इसका डटकर विरोध किया। जॉन को प्रधान मन्त्री बनाया गया, क्योंकि उसने नई शासन-व्यवस्था को स्वीकार कर लिया था। लेकिन इससे उसका कोई लाभ नहीं हुआ। कुछ ही दिनों बाद उसकी हत्या का षड्यन्त्र हुआ और एक आदमी ने उसको छुरा मार दिया। इस हमले से उसकी जान तो नहीं गई, लेकिन वह बुरी तरह घायल हो गया।

जॉन जीवित बच गया, इससे उन लोगों को संतोष नहीं हुआ जो विलियम के पक्ष में थे और यह सोचते थे कि जब तक ये दोनों भाई इस देश में रहेंगे तब तक उनकी योजना सफल नहीं हो सकेगी। इसलिए उन्होंने अपनी चाल बदल दी। उन्होंने दोनों के विरुद्ध षड्यन्त्र करना शुरू कर दिया।

इस षड्यन्त्र में टाइकेलर नामक एक डाक्टर भी शरीक था। उसने झूठी शिकायत दर्ज़ करा दी कि कार्नेलियस ने मुझको घूस दी है और राजकुमार विलियम ही हत्या करने को कहा है।

जैसे ही राजकुमार के समर्थकों को यह शिकायत मिली, वे कार्नेलियस के खिलाफ भड़क उठे और 16 अगस्त को उसको गिरफ्तार करके जेल में ठूंस दिया गया। कार्नेलियस को जेल में खूब कष्ट दिया गया और उससे अपराध स्वीकार करने को कहा गया।

लेकिन कार्नेलियस बड़ा साहसी आदमी था। उसने एक भी बात स्वीकार नहीं की। वह चुपचाप सारी यातनाओं को

सहता रहा। अन्त में हारकर न्यायाधीशों ने सज़ा सुनाई कि कार्नेलियस को सभी पदों से हटा दिया जाए, उससे मुकदमे का पूरा खर्च वसूला जाए, और उसको राज्य से बाहर निकाल दिया जाए।

उधर जब उसके भाई जॉन को इस अन्याय की खबर मिली तो उसने प्रधान मन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया और वह एकान्त में रहने लगा। इस तरह राजकुमार विलियम का एकछत्र राज्य स्थापित हो गया। 20 अगस्त को कार्नेलियस को जेल से बाहर लाकर देश निकाला दिया जानेवाला था। लोग इसीलिए जेलखाने की तरफ दौड़े जा रहे थे कि देखें कार्नेलियस पर इस सज़ा का क्या असर पड़ा है।

भीड़ में सबसे आगे-आगे वही धोखेबाज़ डाक्टर टाइकेलर चल रहा था और लोगों को भड़काता जा रहा था। वह झूठमूठ लोगों को बताता जा रहा था कि किस तरह कार्नेलियस ने मुझको बहुत-से रुपये दिए और राजकुमार की हत्या करने को कहा। जैसे-जैसे लोग उसकी कहानी सुनते थे, उनका गुस्सा बढ़ता जाता था और वे ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने लगते थे। लेकिन जॉन भी इस समय चुप नहीं बैठा था। वह अपने एक नौकर के साथ घोड़ागाड़ी में बैठकर और लोगों की नज़र से बचते हुए जेलखाने के दरवाज़े पर पहुंच गया। वहां पहुंचकर उसने जेलर से कहा, "देखो ग्राइफस, मैं अपने भाई को साथ ले जाने के लिए आया हूं। तुम्हें तो मालूम है कि उसको देशनिकाले की सज़ा मिली है। मैं खुद उसको शहर से बाहर पहुंचा देना चाहता हूं, क्योंकि लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ इधर आ रही है। बहुत मुमकिन है कि वे कार्नेलियस को मार डालने की कोशिश करें।"

जेलर ने फाटक की खिड़की खोलकर जॉन को अन्दर ले लिया। जॉन जेलखाने में मुश्किल से कुछ दूर आगे बढ़ा होगा कि एक सुन्दर लड़की ने उसको नमस्कार किया। इस लड़की का

रोज़ा ने जॉन को उस कोठरी का रास्ता बता दिया जिसमें कार्नेलियस कैद था।

नाम रोज़ा था और यह जेलर की बेटी थी। उसने उस कोठरी का रास्ता बता दिया जहां कार्नेलियस कड़ी यातना सहने के बाद अब पड़ा हुआ कराह रहा था।

जॉन ने कोठरी में जाकर देखा कि उसका भाई एक चौकी पर पड़ा था। उसकी कलाइयां तोड़ दी गई थीं और उंगलियों को कुचल दिया गया था। इस समय उसके घावों पर पट्टियां बांध दी गई थीं, लेकिन फिर भी उसकी छाती और पीठ पर कोड़ों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। कई जगह उसकी चमड़ी छिल गई थी। जब उसने अपने भाई जॉन को देखा तो इतने दर्द में भी उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

कार्नेलियस बोला, "भैया, मैं जानता था कि तुम जरूर आओगे। देखो, जनता को कितना बड़ा धोखा दिया गया है। हम लोग पक्के देशभक्त हैं और हमेशा जनता की सेवा की है; लेकिन कुछ षड्यंत्रकारियों ने जनता को हमारे खिलाफ भड़का दिया। उल्टे उन लोगों ने हम पर आरोप लगाया है कि हमने फ्रांस से समझौता किया है और अपने देश के साथ गद्दारी की है!"

जॉन बोला, "ये लोग मूर्ख हैं। इन्हें पता नहीं है कि ये क्या कर रहे हैं। मोसियो लुवा के साथ जो तुम्हारा पत्र-व्यवहार हुआ था वही इस बात का प्रमाण है कि तुमने हालैण्ड के लिए कितना बड़ा त्याग किया है और उसकी स्वतन्त्रता और गौरव की रक्षा के लिए तुमने कितना बड़ा बलिदान किया है। अच्छा, यह तो बताओ, तुमने उन पत्रों का क्या किया? क्योंकि हमारे दुश्मन हमारे पक्ष के उस आखिरी सबूत को नष्ट कर डालने की कोशिश करेंगे।"

कार्नेलियस ने मुस्कराकर कहा, "भैया, तुम घबराओ मत! चिट्ठियों का पुलिन्दा मैंने अपने पोते बार्ले को संभालकर रखने के लिए दे दिया है। वह बहुत साहसी और निडर लड़का है। वह इस भेद को किसी को नहीं बताएगा।"

लेकिन जॉन ने चिन्तित स्वर में कहा, "ठीक है, लेकिन बार्ले पर तुम्हें इतना भरोसा नहीं करना चाहिए। आखिर वह है तो लड़का ही। हो सकता है कि उसके मुंह से कोई बात निकल जाए। ऐसा होने पर सबसे पहले उसी पर खतरा आएगा और उसका सर्वनाश हो जाएगा। हमारे दुश्मन उसको ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए अच्छा तो यही होगा कि उसको कह दिया जाए कि वह पुलिन्दे को जला डाले। मैं अपने साथ अपना नौकर लेता आया हूं, उसी के हाथ हमें बार्ले के पास यह खबर भेज देनी चाहिए।"

कार्नेलियस राज़ी हो गया। अचानक वह अपनी खिड़की से बाहर का दृश्य देखकर कांप उठा। बाहर हज़ारों की संख्या में लोग जमा हो गए थे और अपने हथियारों को उछाल-उछालकर चिल्ला रहे थे, "देशद्रोहियों को मार डालो!"

जॉन दौड़ा-दौड़ा गया और फाटक के पास खड़े अपने नौकर को बुला लाया। कार्नेलियस ने बड़ी मुश्किल से हाथ में पेंसिल ली और अपने पोते के नाम एक चिट्ठी लिख दी। उसमें लिखा था, "बेटा, जिन चिट्ठियों को मैं तुम्हें सौंप आया था, उन्हें फौरन जला डालो। उनका तुम्हारे पास रहना बहुत खतरनाक है। अगर चिट्ठियां तुम्हारे पास पकड़ी गईं तो लोग तुम्हारी जान ले लेंगे और हम लोगों को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। उनको फौरन जला डालना।" यह लिखकर उसने नीचे अपने दस्तखत कर दिए। चिट्ठी नौकर को दे दी गई। फिर जॉन ने कहा, "अच्छा, उठो, कार्नेलियस, अब हम लोगों को यहां से चल देना चाहिए, वरना लोगों की भीड़ जेलखाने के फाटक को घेर लेगी!"

: 2 :

इधर जब जॉन अपने भाई को जेलखाने से बाहर ले जाने को तैयारी कर रहा था तब उधर बाईस-तेईस साल का एक युवक लोगों की भीड़ को पार करता हुआ टाउन हाल की तरफ बढ़ा जा रहा था, क्योंकि उसे आशा थी कि वहां ताज़ी से ताज़ी खबर मालूम हो सकेगी। वह बार-बार रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछता जा रहा था। जब वह टाउनहाल के पास पहुंचा तो उसने देखा कि ऊपर की एक खुली हुई खिड़की में एक आदमी खड़ा था और भाषण देने की तैयारी कर रहा था। उस युवक ने अपने पास ही खड़े एक अफसर से पूछा, "क्यों जनाब, इस आदमी को आप जानते हैं ? यह कैसा आदमी है ?"

उस अफसर ने युवक को पहचान लिया और झुककर नमस्कार करते हुए कहा, "हां, राजकुमार, यह एक ईमानदार आदमी है। इसके बारे में मैं विशेष कुछ नहीं जानता, क्योंकि मेरा इससे निजी परिचय नहीं है।"

यह युवक और कोई नहीं, राजकुमार विलियम स्वयं था। जो आदमी टाउनहाल की खिड़की से बोलने की कोशिश कर रहा था, उसका नाम बोवेल्ट था। उसने खूब ज़ोर-ज़ोर से बोलने की कोशिश की, लेकिन लोगों के शोर में उसकी आवाज़ डूब गई और वह अन्दर चला गया। कुछ देर बाद लोगों का एक दूसरा झुण्ड शोर मचाता हुआ वहां आ पहुंचा। उनमें सबसे आगे डाक्टर टाइकेलर चल रहा था। भीड़ बढ़ती जा रही थी। टाउनहाल से लेकर जेल के दरवाज़े तक आदमी ठसाठस जमा थे। घुड़सवार पुलिस किसी तरह भीड़ को क़ाबू करने की कोशिश कर रही थी। इतने में राजकुमार ने देखा कि डाक्टर एक क़ागज़

को हिला-हिलाकर कह रहा था, "मिल गया ! मिल गया ! यह हुक्मनामा मिल गया—इसी हुक्मनामे में कार्नेलियस को सज़ा देने का हुक्म दिया गया है !"

राजकुमार ने अपने साथ के अफसर को इशारा किया और उसने जाकर डाक्टर के हाथ से वह हुक्मनामा छीन लिया। लोग चीखते-चिल्लाते रह गए, और वह अफसर भीड़ में गायब हो गया। लोगों ने उस पर हमला करना चाहा, लेकिन सैनिकों ने उसको बचा लिया और उसके साथ-साथ वहां से चले गए।

उधर जॉन अपने भाई कार्नेलियस को भीड़ से बचाकर ले जाने की तरकीब सोच रहा था। जेलखाने के दरवाज़े पर भीड़ जमा थी। इसलिए जेलर की लड़की रोज़ा ने गाड़ी को पिछवाड़े वाले फाटक के पास खड़ा करवा दिया था। रोज़ा को यह मालूम हो गया था कि उसका पिता कार्नेलियस को चुपचाप भागने नहीं देगा, इसलिए वह पिछवाड़े वाले फाटक की ताली भी लेती आई थी। लोगों का शोर बढ़ता जा रहा था। रोज़ा ने जल्दी-जल्दी इन लोगों को पिछवाड़े के रास्ते से बाहर एक गली में निकाल दिया। वहां जॉन की गाड़ी तैयार खड़ी थी। दोनों भाई फौरन जा बैठे और कोचवान को बन्दरगाह की ओर चलने का आदेश दिया। कोचवान ने तेज़ी से घोड़ों को दौड़ा दिया।

उधर जेल के फाटक पर लोगों का शोर बढ़ता जा रहा था। और अब वे दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। जेलर अपनी लड़की के साथ एक गुप्त कोठरी में जा छिपा। लोगों की भीड़ दरवाज़ा तोड़कर जेल में घुस आई। लेकिन कार्नेलियस को लेकर जॉन की गाड़ी अब तक जेल से काफी दूर निकल चुकी थी।

बन्दरगाह को जानेवाले रास्ते पर कुछ दूर पहले लोहे का एक फाटक पड़ता था। वह इस समय बन्द था। गाड़ी फाटक के पास जाकर रुक गई। इसी बीच दो-तीन आदमियों ने जॉन और कार्नेलियस को पहचान लिया। वे लोग दौड़ते हुए अपने साथियों को बुलाने के लिए चल दिए।

इधर जॉन ने पहरेदार से फाटक खोलने के लिए कहा तो उसने बताया कि फाटक को खोलना सम्भव नहीं है क्योंकि लोगों ने सवेरे ही उसकी ताली छीनकर अपने कब्ज़े में कर ली है। जॉन ने कोचवान से कहा, "कोचवान तुम गाड़ी को घुमा लो और दूसरे फाटक की तरफ चलो! हम लोगों को किसी-न किसी तरह अपनी जान तो बचानी ही है!"

कोचवान ने जब गाड़ी घुमाई तो वह यह देखकर घबरा गया कि कुछ दूर सड़क पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी और वे रास्ता रोककर खड़े थे। उसने घोड़ों को तेज़ी से दौड़ाते हुए भीड़ के बीच से गाड़ी को निकालने की कोशिश की। लेकिन भीड़ के पास पहुंचते ही घोड़े खड़े हो गए। तब तक वहां काफी लोग इकट्ठे हो गए थे। उनके हाथों में लाठियां, छुरे और लोहे की छड़ें थीं। एक आदमी ने हथौड़ी से घोड़े के सिर पर वार किया घोड़ा चीखकर ज़मीन पर लेट गया।

दूसरे लोगों ने चिल्लाते हुए गाड़ी पर हमला कर दिया और कार्नेलियस को खींचकर बाहर निकाल लिया। किसी ने लोहे की छड़ से उसके सिर पर वार किया और तुरन्त उसके प्राण निकल गए। जॉन ने अपने भाई को बचाने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने उसको भी नहीं छोड़ा। एक आदमी ने उसकी पीठ में छुरा भोंक दिया और दूसरे ने उसके माथे पर पिस्तौल दाग दी। इस तरह दोनों देशभक्त भाई अपने देश की मूर्ख जनता के हाथों मारे गए।

इधर जब हेग निवासी जॉन और कार्नेलियस की हत्या कर रहे थे, तब उधर जॉन का स्वामिभक्त नौकर क्राइके कार्नेलियस की चिट्ठी लेकर उसके पोते से मिलने के लिए चला जा रहा था। रास्ते में उसे किसी तरह की दिक्कत नहीं हुई। एक सराय में उसने अपना घोड़ा छोड़ दिया और फिर नाव के ज़रिये दोरड्रेख्त की ओर बढ़ना शुरू किया, जहां कार्नेलियस का भतीजा डाक्टर वान बार्ले रहता था।

: 3 :
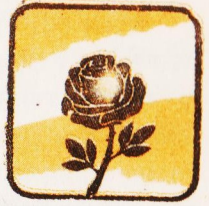
डाक्टर वान बार्ले अपने पुश्तैनी घर में रहता था। इसी घर में उसके पिता और दादा भी अपनी मृत्यु के पहले रहे थे। उसके पिता ने भारत में व्यापार करके कई हज़ार रुपये इकट्ठे किए थे, जो बाद में बार्ले को मिले। इसके अलावा बार्ले के पास और भी बहुत बड़ी सम्पत्ति थी, जिससे कई हज़ार रुपये सालाना की आमदनी होती थी।

बार्ले को खाने-पीने की कोई चिन्ता नहीं थी। इसीलिए उसने एक खर्चीला शौक़ पाल रखा था। वह फूलों के तरह-तरह के पौधे तैयार किया करता था। दूर-दूर तक उसके गुलाबों की चर्चा थी। लोग उसका बाग देखने आते थे। शहर भर में उसके फूलों की क्यारियों, पौधों और कमलों की चर्चा रहती।

इस नगर के लोग बार्ले को बहुत मानते थे, क्योंकि वह शहर के राजनीतिक झगड़ों में नहीं पड़ता था और अपने बगीचे की क्यारियों में मगन रहता था। उसके नौकर-चाकर भी उसको खूब चाहते थे। इतना होने पर भी बार्ले का एक बहुत बड़ा शत्रु था, जिसके बारे में बार्ले को भी कुछ मालूम नहीं था।

बात यह थी कि जब बार्ले ने अपनी गुलाब की क्यारियों को तैयार करना शुरू किया तब उसके पड़ोस में इज़ाक बाक्सटेल नाम का एक आदमी रहता था जो कई साल से गुलाब की खेती किया करता था। उसे भी अच्छी से अच्छी किस्म के गुलाब तैयार करने का नशा था। वह बार्ले की तरह धनवान नहीं था, लेकिन फिर भी उसने बड़ी कोशिश करके अपने घर के पास ही गुलाब का एक बाग तैयार किया। लोगों में उसके फूलों की चर्चा होने लगी और उसकी बिक्री भी बढ़ने लगी।

लेकिन इसी बीच बार्ले को भी गुलाब और दूसरी तरह के फूल तैयार करने की सनक सवार हुई। इसके लिए उसने अपने घर में कुछ मरम्मत शुरू की और छत पर एक कमरा और बनवा लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि इज़ाक की फूल की क्यारियों पर धूप का जाना रुक गया और उसके फूल खराब होने लगे। इज़ाक ने एतराज़ किया तो बार्ले ने बहाना बना दिया कि वह चित्रकारी करता है और इसीलिए उसको अपनी छत पर एक कमरे की ज़रूरत है। कानून ने भी बार्ले का साथ दिया।

इज़ाक को यह मालूम होते देर नहीं लगी कि पड़ोसी बार्ले उसका रोज़गार बरबाद करना चाहता है और अच्छी किस्म के फूल तैयार करके नाम कमाना चाहता है। बस तभी से इज़ाक बार्ले का शत्रु हो गया था और मन ही मन उससे बदला लेने की योजना बनाया करता था।

कभी-कभी वह सोचता था कि चुपचाप नज़र बचाकर वह बार्ले के बाग में घुस जाए और उसके सारे पौधों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाले। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता था क्योंकि कोई भी फूलों का शौकीन व्यक्ति अपने हाथ से फूल के पौधे को नष्ट नहीं कर सकता। उसके लिए फूल के पौधे को नष्ट करना किसी आदमी की हत्या से बढ़कर होता है।

इज़ाक ने सोचा कि मैं अब बार्ले की क्यारियों में पत्थर और मिट्टी के ढेले और लकड़ियों के टुकड़े फेंककर उसके पौधों को नष्ट कर डालूंगा। लेकिन वह यह भी नहीं कर सका। उसे डर था कि अगर कहीं चोरी पकड़ी गई तो उसे न सिर्फ सज़ा मिलेगी बल्कि उसकी बड़ी बदनामी होगी, और योरोप भर के वे लोग उससे नफ़रत करने लगेंगे जो फूल उगाने का कारोबार करते हैं।

अंत में उसने एक तरकीब सोची। उसने दो बिल्लियां पकड़ीं और उन दोनों के पिछले पैरों में छः फुट लंबी एक डोरी बांध दी। फिर उसने बिल्लियों को उठाकर अपने मकान की छत से बार्ले

की क्यारियों में फेंक दिया। बिल्लियां घबराकर क्यारियों में इधर-उधर भागने लगीं। दोनों एक-दूसरे को विपरीत दिशा में खींचने की कोशिश करती थीं और रस्सी के झटके से पौधे टूट जाते थे। इज़ाक यह सोचकर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था कि उसकी योजना कामयाब रही।

सवेरे जब बार्ले उठा और अपनी क्यारियों को देखने गया तो वहां का दृश्य देखकर उसके पांव तले की ज़मीन खिसक गई। कई पौधे टूट गए थे। करीब पन्द्रह-बीस फूल, जिन्हें उसने बड़ी मुश्किल से इतना बड़ा बनाया था, कुचले हुए ज़मीन पर पड़े थे। ऐसा लगता था जैसे किसी ने एक लम्बी छड़ी लेकर पूरी क्यारी को रुई की तरह धुन डाला हो।

लेकिन बार्ले को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस क्यारी में उसने जो काले फूल के पौधे तैयार किए थे उनमें से किसी का भी फूल नहीं टूटा था। काले फूल और उनकी कलियां अब भी सिर उठाए खड़ी थीं और हवा में धीरे-धीरे हिल रही थीं।

इज़ाक को जब यह मालूम हुआ तो उसने अफसोस से अपना सिर पीट लिया, क्योंकि उसकी सारी योजना असफल सिद्ध हुई। वह असल में काले फूलों के पौधों को ही नष्ट करना चाहता था। बार्ले उस दिन से बहुत चौकन्ना रहने लगा। उसने एक माली को रात-भर वहीं क्यारी के पास सोने के लिए नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों बाद फूलों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी हुई जिसमें बार्ले को गहरा काला फूल तैयार करने के लिए एक लाख रुपये का इनाम मिला, क्योंकि अब तक कोई भी वैसा काला फूल तैयार नहीं कर सका था और इस काम को लगभग असंभव माना जाता था। इस खबर को सुनकर इज़ाक ईर्ष्या से जल उठा और बार्ले को नुकसान पहुंचाने की नई तरकीब सोचने लगा।

यहां यह जान लेना ज़रूरी है कि जब बार्ले और इज़ाक में इस तरह फूलों की खेती के सिलसिले में झगड़ा चल रहा था, तब

उर दिनों कार्नेलियस किसी ज़रूरी काम से नगर में आया था और बार्ले के घर ही ठहरा था। यह जनवरी, सन् 1672 की बात है।

बार्ले ने कार्नेलियस को अपना कमरा दिखाया, जहां वह किसी दूसरे आदमी को नहीं जाने देता था और जहां उसने छोटे, छोटे गमलों में फूलों की नई नस्ल के पौधे उगा रखे थे। बार्ले को पता नहीं था कि घर के बाहर से आदमी बराबर उसके कमरे पर नज़र रखता है। इज़ाक अक्सर छिपकर अपनी छत पर बैठा रहता था और दूरबीन के सहारे देखता रहता कि बार्ले अपने कमरे में क्या कर रहा है।

उस दिन इज़ाक ने देखा कि बार्ले कार्नेलियस के साथ उस कमरे में आया और फूलों के बारे में कुछ बताने के बजाय उससे चुपके-चुपके किसी विषय पर बात करने लगा। फिर उसने देखा कि कार्नेलियस ने अपनी जेब से कागज़ का एक पुलिन्दा निकाला और उसको चुपके से बार्ले के हाथों में थमा दिया। इज़ाक फौरन ताड़ गया कि ये कोई बहुत ज़रूरी कागज़ात हैं।

और इज़ाक ने ठीक ही अनुमान लगाया था। ये बहुत जरूरी कागज़ात थे, जिनमें फ्रांस के राजा के युद्धमन्त्री मासियो लुवा और कार्नेलियस के भाई जॉन के पत्र हिफाजत से रखे हुए थे। इन्हीं पत्रों को जलाने के लिए कार्नेलियस ने जेल से बार्ले के नाम पत्र लिखा था, जिसे लेकर जाने को स्वामिभक्त नौकर क्राइके बार्ले से मिलने के लिए रवाना हुआ था।

क्राइके ने वहां पहुंचते ही बार्ले के हाथ में चिट्ठी रख दी और कहा, "कृपया आप इसको तुरन्त पढ़ लीजिए, यह बहुत जरूरी चिट्ठी है।"

इज़ाक अपने घर से यह सब देख रहा था। अचानक उसका दिमाग काम करने लगा और उसने सोचा कि दाल में ज़रूर कुछ काला है। जॉन को प्रधान मन्त्री पद से हटा दिया गया है, फिर उसका खास नौकर बार्ले के पास चिट्ठी लेकर क्यों आया है?

वह दौड़ा-दौड़ा गया और पुलिस को खबर दे आया।

इधर अभी बार्ले चिट्ठी को हाथ में लिये हुए क्राइके से बात ही कर रहा था कि अचानक उसका नौकर दौड़ा हुआ आया और बोला, "मालिक, मालिक! आप जल्दी यहां से भाग निकलिए! सिपाहियों ने पूरे घर को घेर लिया है और वे आपको गिरफ्तार करना चाहते हैं।"

"मुझको गिरफ्तार करना चाहते हैं? आखिर किसलिए?" बार्ले आश्चर्य से बोला। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे, क्या न करे? अचानक उसने काले फूल की तीन कलमें और तोड़ लीं और उनको एक कागज़ में लपेटकर जेब में रख लिया, क्यों कि बड़ी मुश्किल से उसने इन फूलों को तैयार किया था। फिर वह भागने की तैयारी करने लगा।

लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। सिपाहियों का एक दल ऊपर चढ़ आया और उसके कमरे में घुस आया। उनके साथ ज़िले का मजिस्ट्रेट भी था। अन्दर आते ही मजिस्ट्रेट ने कहा, "क्या तुम्हारा ही नाम डाक्टर वान बार्ले है?"

बार्ले ने अन्दर से सिर झुकाकर नमस्कार करते हुए कहा, "जी हां साहब, मैं ही बार्ले हूं। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

मजिस्ट्रेट ने गम्भीर स्वर में कहा, "हमें पता चला है कि तुमने कुछ गैर-कानूनी कागज़ात अपने घर में छिपा रखे हैं। उनको हमारे हवाले कर दो?"

बार्ले ने आश्चर्य से कहा, "भला आप यह क्या कह रहे हैं? मेरे घर में गैरकानूनी कागज़ात कहां हैं?'

"हमको बनाने की कोशिश मत करो! हम जानते हैं कि कार्नेलियस जब यहां आया तो वह तुमको पत्रों का एक पुलिन्दा दे गया था। हमको वही पुलिन्दा चाहिए!"

अब बार्ले की कुछ समझ में आया। उसने घबराकर कहा, "लेकिन साहब, वे तो कुछ ज़रूरी चिट्ठियां हैं। गैर-कानूनी

कागज़-पत्र तो हैं नहीं। और उनको मैं आपको नहीं दे सकता क्योंकि वह किसी की अमानत है और मुझको संभाल कर रखने के लिए दी है।"

"खैर, हम खुद खोज लेंगे! सिपापियो, इसके घर की तलाशी लो। पहले इस कमरे को अच्छी तरह देख डालो ?" मजिस्ट्रेट ने सिपाहियों को हुक्म दिया।

सिपाही कमरे की तलाशी लेने लगे। मजिस्ट्रेट भी एक अलमारी खोलकर देखने लगा। अलमारी की तीसरी दराज़ में उसको तरह-तरह के फूलों की करीब बीस कलियां और कलमें बहुत हिफाजत के साथ अलग-अलग कागज़ में लिपटी हुई मिलीं। उसने और अन्दर हाथ डाला तो उसके हाथों में चिट्ठियों का वह पुलिन्दा आ गया। उसने एक चिट्ठी निकालकर उस पर नज़र डाली और कहा, "यहां चिट्ठियां हैं! हमको ठीक ही खबर मिली थी। अच्छा, अब हम तुमको गिरपतार करते हैं!"

बार्ले ने बहुत आश्चर्य प्रकट किया और कहा, "कहीं आपसे गलती तो नहीं हो रही है। मजिस्ट्रेट साहब आप मुझको गिफ्तार क्यों करना चाहते हैं! मैंने तो कोई ऐसा काम किया नहीं। लेकिन मजिस्ट्रेट ने उसकी एक न सुनी। उसको गिरफ्तार करके सिपाहियों के पहरे में बाहर खड़ी एक गाड़ी में बिठाया गया और सीधे राजधानी हेग के लिए रवाना कर दिया गया।

: 4 :

इस तरह इज़ाक ने धोखे से अपने प्रतिद्वन्द्वी बार्ले को गिरफ्तार करवा दिया। पुलिस को सूचना देने के पहले एक बार ज़रूर वह यह सोचकर कुछ हिचका कि इस तरह बार्ले को फंसाना ठीक नहीं है, क्योंकि राज्य के ज़रूरी कागज़-पत्रों को छिपाकर रखने के अपराध में उसको फांसी की सज़ा मिल सकती है। लेकिन वह बार्ले की सफलता को देखकर बहुत चिन्तित था और उससे बहुत ईर्ष्या करता था; इसलिए उसने पुलिस को सूचना दे दी।

बार्ले की गिरफ्तारी से उसका काम आसान हो गया। रात में उसने बार्ले के घर में घुसकर कुछ अच्छी नस्लों के पौधे और उनके बीज चुराने का निश्चय किया। जब अंधेरा हो गया तो वह एक सीढ़ी के सहारे दीवार फांदकर बार्ले के घर के बगीचे में उतर गया।

इस समय वहां कोई न था। घर सूना पड़ा था। अपने मालिक की गिरफ्तारी के कारण घर के नौकर-चाकर बहुत दुखी थे और रसोईघर में बैठे बातें कर रहे थे। इज़ाक पांव दबाकर क्यारी के पास जा पहुंचा। उसको मालूम था कि यहीं बार्ले ने काले फूल के पौधे बो रखे हैं। लेकिन उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहां पर जमीन खाली पड़ी थी। उसने मिट्टी में हाथ डालकर पौधे की कलम या बीज ढूंढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथ कुछ नहीं लगा।

इज़ाक बड़बड़ाता हुआ और मन ही मन में बार्ले को गाली देता हुआ लौट आया और दीवार फांदकर फिर से अपने बगीचे में जा पहुंचा। वहां बैठकर वह सोचने लगा। अचानक उसे ख्याल आया कि हो सकता है बार्ले ने काले फूल के पौधे को अपने

गुप्त कमरे में लगा रखा हो। इस गुप्त कमरे में क्या है, यह जानने की उसे बहुत दिनों से इच्छा थी।

उस कमरे के पास एक मकान की छत पड़ती थी, जिसकी उस समय मरम्मत चल रही थी। वह चुपके से उस मकान की छत पर चढ़ गया और वहां से सीढ़ी के सहारे बार्ले के गुप्त कमरे की खिड़की के पास जा पहुंचा। ज़रा-सी कोशिश से खिड़की खुल गई और वह अन्दर कमरे में उतर गया।

इस कमरे में भी उसने बहुत खोज की लेकिन उसके हाथ काम की कोई चीज़ नहीं लग सकी। असल में बात यह थी कि बार्ले ने गिरफ्तार होने के एक दिन पहले ही अपने बाग की क्यारी से काले फूल के पौधे उखाड़ लिए थे और उनको वह प्रयोग के लिए अलग-अलग तीन गमलों में लगाकर अपने इस कमरे में ले आया था। गिरफ्तार होने के कुछ देर पहले ही उसने तीनों पौधों में लगी हुई तीन काली कलियां तोड़ ली थीं और साथ ही उनकी तीन कलमें भी काट ली थीं।

अंत में हारकर वह बार्ले की उस बही को देखने लगा, जिसमें वह अपने प्रयोग का पूरा विवरण लिखा करता था और बीजों तथा कलम वगैरह के नम्बर भी दर्ज करता था। यह बही एक तरह की डायरी थी। इज़ाक ने देखा—उसमें लिखा था, "20 अगस्त, सन् 1672—आज मैंने काले फूल के पौधों की तीन कलमें काटीं। इनसे अब मैं एक नया पौधा तैयार करूंगा।"

यह पढ़कर इज़ाक ने अपना माथा ठोक लिया। उसे लगा कि उसने बेकार ही इतना बड़ा पाप किया और बार्ले को जेल भिजवा दिया। लेकिन बार्ले ने इन कलमों को कहां छिपा रखा है? बार-बार सोचने पर भी उसकी कुछ समझ में नहीं आया और हारकर वह खाली हाथ अपने घर लौट आया।

: 5 :

उधर जब भीड़ जेल के फाटक तोड़कर अन्दर घुसी तो उसके पहले ही जेलर अपनी लड़की रोज़ा के साथ गुप्त स्थान में जा छिपा। लोगों को जब कार्नेलियस जेल में नहीं मिला तो वे बहुत नाराज़ हुए और जेल में आग लगाने की तैयारी करने लगे। लेकिन तभी उन्हें खबर मिली कि कार्नेलियस और जॉन दोनों भागते हुए पकड़े गये और भीड़ के हाथों मार डाले गए, तो लोगों का गुस्सा कुछ शांत हुआ और वे जेल से चले गए।

रोज़ा भी अपने पिता को लेकर बाहर निकल आई। जेलर के हुक्म पर नौकरों ने फिर से जेल का फाटक बन्द कर दिया। आधी रात के समय अचानक फिर से फाटक पर किसी के आने की आहट हुई। ये दो सिपाही थे, जो डाक्टर वान बार्ले को गिरफ्तार करके जेल में पहुंचाने के लिए आए थे।

जेलर ने नये कैदी को फाटक के अन्दर ले लिया। जब उसने कागज़ में कैदी का नाम पढ़ा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उसने हंसते हुए कहा, "तो तुम कार्नेलियस के रिश्तेदार हो? चलो, तुमको उसी कोठरी में ठहरा दूं, जिसमें कार्नेलियस रहता था। वह तुम लोगों की खानदानी कोठरी है!"

जेलर बार्ले को उसी कोठरी की ओर ले चला। रास्ते में जब वह एक ज़ीने की ओर बढ़ रहा था तो उसने देखा कि रोज़ा हाथ में लालटेन लिये हुए अपने कमरे से निकल आई और आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी। वह उस समय बहुत सुन्दर लग रही थी। बार्ले उसकी ओर देखता रह गया। जेलर ने उसको अपने साथ दाहिनी तरफ चलने का इशारा किया। एक सिपाही ने कोठरी का दरवाज़ा खोला और बार्ले को अन्दर बन्द करके ताला लगा

दिया।

बार्ले जेल की कोठरी में अपने बिस्तर पर पड़ा था, लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। रात-भर वह उसी तरह करवट बदलता रहा। जब सवेरा हुआ तो उसने उठकर जेल की खिड़की से इधर-उधर देखा। खिड़की में लोहे की छड़ें लगी हुई थीं। वहां से जेल का फाटक दिखाई पड़ता था। आंगन के एक कोने में खम्भों पर दो लाशें झूल रही थीं। उन्हें इतनी ऊंचाई पर टांगा गया था कि सड़क से भी उन्हें आसानी से देखा जा सकता था, वहां बड़ा-सा तख्ता लगा था, जिस पर लिखा था :

"यहां पर जॉन द-विट और कार्नेलियस-द-विट नामक दो भाइयों को टांगा गया है, जो जनता के शत्रु थे और फ्रांस के राजा से दोस्ती निभाते थे !"

बार्ले को अब तक यह पता नहीं था कि जॉन और कार्नेलियस का यह अन्त हुआ है। वह बुरी तरह उत्तेजित हो उठा और ज़ोर-ज़ोर से अपनी कोठरी का दरवाज़ा पीटने लगा। जेलर दौड़ता हुआ आया, फिर उसने बार्ले को सारा किस्सा बताया और कहा, "देख लो, राजकुमार विलियम के दुश्मनों का यह अन्त होता है !"

बार्ले को अब विश्वास हो गया कि उसकी मौत भी इसी तरह होगी। मन में वह बहुत दुखी था और काफी देर तक अपना सिर थामे बैठा रहा। फिर उसने अपनी जेब से काले फूल की तीन कलमें निकालीं और उनको कोठरी के एक कोने में पानी के घड़े के पीछे पत्थर के नीचे छिपा दिया। उसने मन में सोचा कि मेरी इतने दिनों की मेहनत बेकार गई। बड़ी मुश्किल से मैंने काले फूल की नस्ल तैयार की थी, लेकिन यह सब बेकार रहा। मेरे साथ-साथ यह प्रयोग भी समाप्त हो जाएगा।

शाम को जब जेलर बार्ले के लिए रूखी-सूखी रोटी और ज़रा-सी भाजी लेकर आया तो कोठरी का दरवाज़ा खोलते समय अचानक पत्थर पर उसका पैर फिसल गया और वह कोहनी के बल फर्श पर गिर पड़ा। बार्ले ने आगे बढ़कर जब उसकी मदद करनी चाही तो उसने डांटकर कहा, "खबरदार, तुम जहां हो, वहीं खड़े रहो। आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं है !"

जेलर कहने को तो यह सब कह गया लेकिन वह ज़मीन से उठ नहीं सका। उसका हाथ कलाई के ऊपर से टूट गया था। मारे दर्द के वह बेहोश होने लगा और देखते-देखते चुपचाप मुर्दे की तरह पड़ गया।

बार्ले ने पास जाकर जेलर की मदद करनी चाही। वह डाक्टर तो था ही; उसे यह पहचानते देर न लगी कि जेलर के हाथ की हड्डी टूट गई है। इतने में जेलर की लड़की रोज़ा भी दौड़ती हुई वहां आ पहुंची। पहले तो वह यह देखकर घबराई कि शायद नये कैदी ने उसके पिता पर हमला कर घायल कर दिया है। वह बार्ले को डांटने लगी, लेकिन थोड़ी देर बाद उसे अपनी गलती मालूम हो गई और उसने बार्ले से क्षमा मांगते हुए कहा, "माफ कीजिएगा, मुझे भ्रम हो गया था। मैं बिल्कुल गलत समझ बैठी थी। आप तो बड़े भले आदमी मालूम होते हैं। मेरे पिता ने आपको काफी बुरा-भला कहा था, लेकिन आपने उसका कोई ख्याल नहीं किया और इस समय आप उनकी मदद कर रहे हैं।"

तब तक जेलर को भी होश आ गया। बार्ले ने उससे कहा, "घबराइए मत, मैं डाक्टर हूं। आपके हाथ की हड्डी टूट गई है, उसको मैं ठीक कर सकता हूं। आप लकड़ी की दो खपच्चियां और पट्टी के लिए कुछ कपड़ा मंगवा लीजिए।"

रोज़ा दौड़ी हुई गई और सारा सामान ले आई। बार्ले ने बड़ी सफाई से जेलर के हाथ की हड्डी ठीक से बैठाकर और खपच्चियां लगाकर पट्टी बांध दी। जब वह पट्टी बांध रहा था, तो दर्द के मारे एक बार फिर से जेलर बेहोश हो गया। बार्ले ने रोज़ा से कहा, "जाओ, जल्दी से थोड़ा-सा सिरका ले आओ। इनकी कनपटी पर सिरका मलने से इन्हें होश आ जाएगा।"

बार्लें ने जेलर की हड्डी पर पट्टी वांधी । रोज़ा ने उसे धन्यवाद दिया ।

लेकिन रोज़ा वहां से हटी नहीं और उसकी तरफ गौर से देखती रही । फिर बोली, "तुमने पिताजी का इलाज करके मेरी मदद की है । इसलिए मैं भी तुम्हारी मदद करना चाहती हूं । मुझे पता नहीं कि तुम दोषी हो या बिल्कुल निर्दोष हो । लेकिन कल तुम्हारा मुकद्दमा शुरू होने वाला है और बहुत मुमकिन है कि परसों तुम्हें फांसी पर चढ़ा दिया जाए । इसलिए अभी मौका है; जाओ, तुम यहां से फौरन भाग निकलो ।"

बार्ले फौरन खड़ा हो गया और वहां से भागने की तैयारी करते हुए बोला, "मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूंगा । लेकिन मेरे भागने से कहीं तुम तो मुसीबत में नहीं फंसोगी ? लोग तुम पर शक करने लगेंगे ।"

रोज़ा बोली, "तुम मेरी चिन्ता न करो, जल्दी से भाग निकलो !"

बार्ले कोठरी के दरवाज़े की तरफ बढ़ा ही था कि इतने में जेलर को फिर होश आ गया । वह अपनी लड़की से बोला, "रोज़ा, इधर आओ, ज़रा मुझको सहारा दो !" रोज़ा ने आगे बढ़कर अपने पिता को सहारा दिया । बाहर निकलकर जेलर ने कोठरी में ताला बन्द कर दिया । इस तरह बार्ले भागने का मौका पाकर भी जेल से भाग नहीं सका ।

: 6 :

दूसरे दिन जेल में ही बार्ले का मुकद्दमा शुरू हुआ। जांच-पड़ताल में ज्यादा देर नहीं लगी, क्योंकि सारे सबूत सामने थे। बार्ले ने जॉन और कार्नेलियस के उन पत्रों को घर में छिपा रखा था, जो उन्होंने फ्रांस को लिखे थे। यह एक बहुत बड़ा अपराध और देशद्रोह था।

बार्ले को अपनी सफाई में ज़्यादा नहीं कहना था। उसने सिर्फ इतना कहा, "मेरा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं एक पेशेवर डाक्टर हूं। इसके अलावा मुझे बागवानी का शौक़ है और मैं फूलों की नई से नई नस्लें तैयार करता रहता हूं। कार्नेलियस ने मुझको चिट्ठियों का बंडल रखने के लिए दिया था, लेकिन मैंने यह नहीं देखा था कि वे चिट्ठियां कैसी थीं और उनमें क्या लिखा था। मैं बिलकुल निर्दोष हूं।"

लेकिन न्यायाधीशों ने बार्ले को देशद्रोह का अपराधी पाया और उसको फांसी की सज़ा सुना दी।

न्यायाधीशों ने अपने फैसले में कहा कि कल दोपहर में इसी जेल के आंगन में बार्ले की गर्दन काट दी जाएगी।

सज़ा सुनकर बार्ले को जितना दुख हुआ, उससे ज़्यादा उसको आश्चर्य हुआ, क्योंकि ऐसी मृत्यु की उसने कभी कल्पना नहीं की थी। वह वहां से अपनी कोठरी में लौट आया।

कुछ देर बाद रोज़ा उसकी कोठरी के दरवाज़े पर आ खड़ी हुई। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और वह सिसक रही थी। बार्ले की सज़ा के बारे में सुनकर वह बहुत दुखी थी।

बार्ले ने उसको बहुत समझाया और धीरज बंधाने की कोशिश की। फिर उसने काले फूल की कलम निकाली और रोज़ा से कहा,

"देखो रोज़ा, मुझे तुम पर पूरा भरोसा है, इसलिए मैं तुमको एक बात बताता हूं। मैं बरसों से फूलों का बड़ा शौकीन रहा हूं और अपने घर में फूलों की अच्छी से अच्छी नस्ल तैयार करता रहा हूं। अन्त में मैंने काले फूल को उगाने का भेद मालूम कर लिया है। तुमने शायद यह सुना हो कि हार्लेम में एक अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रतियोगिता होने जा रही है, जिसमें काला फूल उगाने पर एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया है। उस काले फूल की कलम और तीन कलियां मैंने इस कागज में लपेट रखी हैं। इन्हें तुम अपने पास रखो। इनको मेरी चिट्ठी के साथ तुम हार्लेम की प्रतियोगिता में भेज देना। तुमको एक लाख रुपये का इनाम मिल जाएगा। उन रुपयों को तुम अपनी शादी में खर्च करना। यह मेरी तुम्हारे लिए भेंट है।"

रोज़ा ने सिसकते-सिसकते बार्ले से वह पुड़िया ले ली जिसमें काले फूल की कलम रखी हुई थी। बार्ले कहने लगा, "देखो, तुम मेरे घर चली जाना और मेरे माली से कहकर छः नम्बर की क्यारी से कुछ मिट्टी निकलवा लेना। फिर उसको एक बड़े डिब्बे में भरकर उसमें इस कलम को बो देना। अगले मई महीने तक इसमें फूल लग आएंगे। फिर तुम हार्लेम की पुष्प-प्रतियोगिता के अध्यक्ष को इसकी सूचना भेज देना। वे जांच-पड़ताल करके इनाम का रुपया तुमको दे देंगे।"

रोज़ा ने एक गहरी आह भरी। बार्ले ने अपनी बात जारी रखी, "यह फल ही मेरी ज़िन्दगी-भर की कमाई है। इसका नाम मैंने तुम्हारे ही नाम पर रोज़ा कार्नेलियस रखा है—इसमें तुम्हारा और मेरा दोनों का नाम लिखा है। अच्छा, अब तुम मेरे लिए एक कागज़ और पेंसिल ले आओ। मैं अपना आखिरी वक्तव्य लिखना चाहता हूं।"

रोज़ा कागज़ और पेंसिल ले आई। उसमें बार्ले ने लिखा, "मैं काले फूल की कलम रोज़ा को सौंप रहा हूं। इसलिए इनाम भी उसी को मिलना चाहिए। मेरी इस चिट्ठी को मेरा वसीयतनामा

समझा जाए और रोज़ा को मेरा उत्तराधिकारी माना जाए। फिर नीचे उसने अपना दस्तख़त कर दिया।

दूसरे दिन निश्चित समय पर बार्ले की फांसी की तैयारी हुई। बार्ले को जब जेल के आंगन में निकाला गया, तो उसने देखा कि दूर एक कोने में रोज़ा खड़ी है और उसकी दी हुई पुड़िया को अपने सीने से लगाए हुए है।

जल्लाद के कहने पर बार्ले ने अपना सिर लकड़ी के कुन्दे पर टिका दिया। जल्लाद एक भारी-सी तलवार को उठाकर वार करने ही जा रहा था कि अचानक एक घुड़सवार दौड़ता हुआ जेल के फाटक पर आया। उसके हाथ में कागज़ का एक टुकड़ा था। उसने कागज़ को हिलाते हुए दूर से ही चिल्लाकर कहा, "कैदी की गर्दन न काटी जाए; उसकी सज़ा बदल दी गई है।"

जेलर ने घुड़सवार के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ी और फिर बार्ले को बताया कि राजकुमार विलियम ने उसकी फांसी की सज़ा माफ कर दी है और उसको आजन्म कारावास की सज़ा दी है। उसको अपने गांव के पास ही लूवेन्स्टीन नामक एक स्थान के किले में बन्द रखा जाएगा।

: 7 :
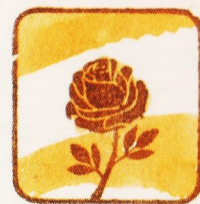
जब बार्ले को फांसी की सज़ा सुनाई गई तो इस खबर को सुनकर बार्ले का पड़ोसी और उसका प्रतिद्वन्द्वी इज़ाक भी फांसी का तमाशा देखने के लिए दूसरे लोगों के साथ जेल के अहाते में मौजूद था। जब उसने यह सुना कि बार्ले की फांसी की सज़ा माफ कर दी गई है, अब उसकी गर्दन नहीं काटी जाएगी, तो उसे बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ।

जब से बार्ले को गिरफ्तार करके राजधानी में लाया गया था, तब से इज़ाक भी गांव छोड़कर यहीं पड़ा हुआ था। वह किसी न किसी तरह काले फूल की कलम को हथियाना चाहता था। पहले उसने जेलर को अपनी तरफ मिलाने की कोशिश की, लेकिन जेलर ने उसे डांटकर भगा दिया।

लेकिन इतने से इज़ाक निराश नहीं हुआ। उसने रोज़ा को अपनी तरफ मिलाने की कोशिश शुरू की। उसने रोज़ा को सोने के गहने देने का वादा किया। लेकिन रोज़ा ने यह कहकर टाल दिया, "भला इसमें मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूं! अगर कैदी के पास कोई चीज़ है तो अब वह जल्लाद को ही मिलेगी, तुम उससे जाकर बात करो।"

इज़ाक ने जल्लाद को एक तरफ बुलाकर कहा, "सुनो भाई, यह कैदी मेरा बड़ा पुराना दोस्त है। इसके मरने के बाद इसकी यादगार के रूप में मैं इसके कपड़े अपने पास रखना चाहता हूं। इसलिए इसकी गर्दन काटने के बाद तुम इसके कपड़े मुझको दे देना। जल्लाद इसके लिए राज़ी हो गया। लेकिन उसने इसके लिए एक सौ रुपये पेशगी मांगे। इज़ाक ने खुशी-खुशी रुपये उसको दे दिए। उसे आशा थी कि बार्ले ने काले फूल की कलमें अपनी

जेब में रख रखी होंगी और वे सब उसे आसानी से प्राप्त हो जाएंगी।

लेकिन जब उसने यह सुना कि बार्ले की फांसी की सज़ा माफ कर दी गई और उसकी गर्दन नहीं काटी जाएगी, तो बहुत निराश हुआ। उसे बार्ले पर गुस्सा आने लगा और वह घृणा से उसकी तरफ देखने लगा। वह तो यहां तक चाहता था कि किसी तरह लोग थोड़ी देर के लिए हट जाएं और वह बार्ले का गला घोटकर उससे काले फूल की कलम छीन ले।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। बार्ले को लूवेन्स्टीन नगर के किले में बन्द किया जाने वाला था। वहीं वह जीवन-भर रहेगा और इज़ाक के हाथ कभी नहीं लग सकेगा। हो सकता है, बार्ले जेल के बगीचे में ही काले फूल की कलम लगा दे और वहां अपना प्रयोग जारी रखे। यह सब सोचकर इज़ाक बहुत दुखी हुआ। उसकी सारी योजना पर पानी फिर गया था।

: 8 :

बार्ले को लूवेन्स्टीन के किले में सज़ा काटते हुए कई दिन बीत गए। उसको किले के एक बुर्ज में बन्द करके रखा गया था। इसमें एक खिड़की थी, जहां से बार्ले दूर-दूर तक का दृश्य देख सकता था। वहां से उसे अपने गांव दोरद्रेख के मकान दिखाई पड़ते थे। हवा के बल पर चलने वाली आटा पीसने वाली चक्कियों के बड़े-बड़े पंखे भी वहां से नज़र आते थे। उनको देखकर बार्ले बराबर अपने गांव की कल्पना में डूबा रहता था। उसकी खिड़की में कबूतर का एक जोड़ा रहता था जो रोज सवेरे उसके गांव की ओर उड़ जाता था और शाम को फिर लौट आता था। बार्ले सवेरे कबूतरों को तब तक उड़ते हुए देखता रहता था, जब तक कि वे आंखों से ओझल नहीं हो जाते थे। उसे इतना विश्वास हो गया था कि ये कबूतर रोज़ उसके गांव जाते थे। शाम को वह बड़ी उत्सुकता से उनके लौटने की राह देखता रहता था।

एक दिन बार्ले ने सोचा कि इन कबूतरों के ज़रिये मैं अपने गांव कोई संदेश भेज सकता हूं। यह विचार आते ही उसने इसकी तैयारी शुरू कर दी। मौका पाकर उसने एक कबूतर को पकड़ लिया। फिर उसने अपनी नौकारनी के नाम एक चिट्ठी लिखकर कबूतर के पैर में बांध दी। चिट्ठी में उसने दो लाइन रोज़ा के लिए भी लिख दी थीं। चिट्ठी पर उसने अपनी नौकरानी का पता लिखा था। चिट्ठी पाने वाले के नाम उसने यह संदेश लिख दिया था कि कृपया इस चिट्ठी को ऊपर लिखे पते पर मेरी नौकरानी के पास जल्दी से जल्दी भिजवा दें। फिर उसने कबूतर को छोड़ दिया। कबूतर सीधा बार्ले के गांव की ओर उड़ चला। थोड़े ही समय बाद चिट्ठी बार्ले की नौकरानी को मिल गई।

एक दिन शाम को बार्ले अपनी कोठरी की खिड़की में बैठा बहुत निराशा से बाहर का दृश्य देख रहा था। शाम हो गई थी। चारों तरफ अंधेरा फैलता जा रहा था और तारे निकल आए थे। अचानक बार्ले को कोठरी के दरवाज़े के बाहर रोज़ा की आवाज़ सुनाई दी। पहले तो उसे विश्वास नहीं हुआ। लेकिन फिर वह लपककर दरवाज़े के पास जा पहुंचा। उसने देखा कि रोज़ा जोना पार करके उसकी कोठरी की तरफ आ रही थी।

रोज़ा ने दरवाज़े से झांकते हुए कहा, "बार्ले, देखो मैं आ गई ?"

बार्ले मारे खुशी के चिल्ला उठा, "अरे, रोज़ा ! तुम यहां कैसे आईं ?"

"ज़रा धीरे बोलो बार्ले, मेरे पिताजी न सुन लें। वे ज़ीने के नीचे खड़े हैं और जेलर से अपना काम समझ रहे हैं। उनकी बदली अब इस जेल में हो गई है।"

"क्या ? तुम्हारे पिता अब यहां के जेलर नियुक्त हुए हैं ? यह तो खुशी की बात है। अब मैं हर रोज़ तुमको देख सकूंगा।"

रोज़ा ने उसको बताया, "हां, मेरे पिता अब यहां के जेलर नियुक्त हुए हैं। बात यह है कि मेरी एक चाची राजकुमार विलियम के महल में काम करती है। उसने किसी तरह राजकुमार से कह-सुनकर पिताजी की बदली यहां करवा दी।"

इतने में रोज़ा का पिता हाथ में एक छोटी लालटेन लिए हुए अपने कुत्ते के साथ ऊपर आया। रोज़ा दौड़कर उसके पास चली गई। जेलर इस समय कैदियों को देखने निकला था। बार्ले की कोठरी के दरवाज़े पर आकर उसने लालटेन की रोशनी उसके चेहरे पर फेंकी और उसको पहचानकर कहा, "कहो डाक्टर वान बार्ले कैसे मिज़ाज हैं ? अब मैं तुम्हारा जेलर नियुक्त हुआ हूं। तुम तो जानते ही हो कि मैं बहुत सख्त आदमी नहीं हूं, लेकिन मैं कैदियों को शरारत करने का मौका देना भी नहीं पसंद करता।"

बार्ले ने मुस्कराकर कहा, "जेलर साहब, मैं आपको बड़े मज़े में जानता हूं। हम लोग एक दूसरे के लिए नये थोड़े ही हैं !"

जेलर ने खुश होते हुए कहा, "हां बिलकुल ठीक है। सचमुच तुम अच्छे डाक्टर मालूम होते हो। तुमने बहुत अच्छी तरह हाथ बैठाया था।"

तब तक कोठरी की खिड़की में पंखों की फड़फड़ाहट हुई और एक कबूतर अन्दर आ बैठा। फिर जैसे ही कबूतर ने जेलर को देखा, वह डरकर वहां से उड़ गया। जेलर यह देखकर भौंचक्का रह गया। उसने पूछा, "क्यों बार्ले, यह क्या है ?"

"यह मेरा कबूतर है, जेलर साहब। मैंने कबूतर के एक जोड़े को यहां खिड़की में पाल रखा है।" बार्ले ने मुस्कराकर कहा।

यह सुनकर जेलर बिगड़ खड़ा हुआ। वह बोला, "तुम्हारे कबूतर हैं ! तुमने यहां जेल में कबूतर पाल रखे हैं ! यह तो जेल के कानून के खिलाफ है। मैं कल ही इन कबूतरों को गोली मार दूंगा।"

फिर बड़बड़ाते-बड़बड़ाते जेलर आगे बढ़ गया। चलते समय रोज़ा कहती गई, "बार्ले, मैं रात में नौ बजे फिर आऊंगी।"

जेलर की बात सुनकर बार्ले बड़ा चिंतित हुआ। उसने सोचा कि बेचारे कबूतर व्यर्थ ही मारे जाएंगे। इसलिए उसने उनका घोंसला तोड़ डाला और हमेशा के लिए वहां से भगा दिया।

ठीक नौ बजे रोज़ा फिर उससे मिलने आई। बार्ले फौरन अपने दरवाज़े के पास जा खड़ा हुआ। उसने पूछा, "रोज़ा, तुम अपने पिता की नज़र बचाकर यहां तक कैसे चली आईं ?"

रोज़ा बोली, "मेरे पिताजी हर रोज खाना खाने के बाद सो जाते हैं। इस समय मैं तुमसे रोज मिल सकती हूं। तुमने काले फूल की जो कलमें मुझे दी थी, उन्हें मैं लेती आई हूं। मैंने उनको अपने कमरे में संभालकर रखा है।"

यह सुनकर बार्ले को बड़ा संतोष हुआ कि उसकी चीज़ रोज़ा के पास सुरक्षित है। फिर दोनों कुछ देर तक इधर-उधर की बातें

करते रहे। इसके बाद रोज़ा वापस लौट गई।

दूसरे दिन फिर रोज़ा आई। उस दिन वह काले फूल की कलमें अपने साथ लेती आई थी। वह बोली, "बार्ले, लो अपनी अमानत संभालो। तुमने इसलिए इन्हें मुझे सौंपा था कि तुम्हें फांसी होने वाली थी, लेकिन अब तो तुम जिन्दा हो, इसलिए अब अपने पास ही रखो।"

बार्ले बोला, "नहीं-नहीं रोज़ा, इनको तुम अपने पास रखो। हम दोनों को मिलकर एक काम करना है। हम काले फूल का एक बड़ा-सा पौधा तैयार करेंगे। इस जेल में बगीचा तो है ही। तुम वहां से थोड़ी-सी मिट्टी लेती आना। मैं देखकर बता दूंगा कि पौधा उसमें लग सकेगा या नहीं। तुम सबसे पहले काले फूल की एक कलम लगाना ताकि अगर वह खराब हो गई तो हमारे पास दो कलमें बची रहेंगी। इसके अलावा तुम होशियार रहना कि कोई उस पौधे को नुकसान न पहुंचा सके या चुरा न ले जाए। मुझको डर है कहीं ये कलमें चोरी न चली जाएं, क्योंकि ये बड़ी कीमती हैं और इनपर एक लाख रुपये का इनाम मिलने वाला है।"

इस तरह बार्ले और रोज़ा ने जेल के बगीचे में ही काले फल उगाने का निश्चय किया। एक कलम बार्ले ने अपनी कोठरी में लगाई। रोज़ा रोज़ थोड़ी-थोड़ी मिट्टी अपने साथ ले आती थी और बार्ले उसको पानी पीने की एक फूटी गगरी में जमा करता रहता था। जब मिट्टी काफी जमा हो गई, तो उसमें काले फूल की एक कलम लगा दी।

इसके बाद रोज़ा और बार्ले लगभग रोज़ मिलते रहते थे और एक दूसरे से काले फूल के पौधों का हाल पूछते रहते थे। इसके अलावा रोज़ा बार्ले से पढ़ना-लिखना भी सीखती रहती थी।

उधर जेलर को कुछ भी पता नहीं था। वह बार्ले को एक खतरनाक कैदी मानता था और उस पर कड़ी नज़र रखता। कबूतर वाली घटना के बाद से वह बार्ले से कुछ नाराज़ भी हो गया था और उसको अक्सर डांटता रहता था।

: 9 :
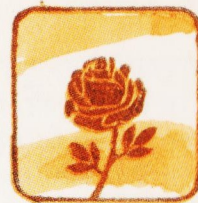
एक दिन रोज़ा ने बार्ले को बताया, "आजकल मेरे पिताजी के पास उनका एक पुराना दोस्त अक्सर आने लगा है। पिताजी से उसकी मुलाकात हेग में हुई थी। बातचीत में और देखने में तो वह कुछ भला आदमी लगता है, लेकिन उसकी हरकतों से मुझे कभी-कभी उस पर संदेह भी होता है।"

बार्ले बोला, "अरे, वह कोई गुप्तचर होगा! अक्सर सरकार इस तरह के गुप्तचरों को जेलर और जेल में रहने वाले कैदियों पर नज़र रखने के लिए भेजा करती है।"

रोज़ा कुछ सोचकर बोली, "नहीं ऐसा तो नहीं मालूम होता, बल्कि मुझे तो लगता है कि वह शायद मेरा पीछा कर रहा है। क्योंकि कल जब मैं कलम लगाने के लिए बगीचे में क्यारी तैयार कर रही थी, तो अचानक वह एक पेड़ के पीछे से निकल आया और मुझसे पूछताछ करने लगा। मैंने किसी तरह उसको टाल दिया। लेकिन लगता है कि वह काफी देर से पेड़ के पीछे छिपा हुआ था।"

"अच्छा, ऐसी बात!" उसकी उम्र क्या होगी, और तुम्हें उसका नाम मालूम है? देखने में कैसा लगता है?"

"अपना नाम तो वह जेकब बताता है। देखने में बड़ा बदसूरत और कुछ दुष्ट प्रकृति का आदमी मालूम होता है। उसकी उम्र लगभग पचास साल की होगी। इस समय वह पिताजी का मेहमान बनकर यहीं रह रहा है और अक्सर जेल में घूमता रहता है। अच्छा, यह बताओ तुम्हारे पौधे का क्या हाल है?"

बार्ले ने कहा, "ठीक ही है। अभी तो उसमें अंकुर भी नहीं फूटा है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह कुछ दिनों में तैयार हो

जाएगा। रोज़ा, तुम ज़रा एक बात ध्यान रखना। तुम अपने काम में किसी की मदद मत लेना। किसी को यह मालूम नहीं होना चाहिए कि तुम काले फूल का पौधा उगा रही हो।"

रोज़ा जब चली गई तो बार्ले काफी देर तक सोच-विचार में पड़ा रहा। उसे भी उस आदमी पर शक हो रहा था, जिसके बारे में रोज़ा बता रही थी। इस आदमी के बारे में सुनकर बार्ले की चिन्ता बढ़ गई। लेकिन वह कर ही क्या सकता था?

बार्ले और रोज़ा को पता नहीं था कि जेलर ने एक दिन चुपके से उन दोनों को बातें करते हुए देख लिया था। इसके अलावा इज़ाक ने भी, जो कि अपना भेष बदलकर अब यहां जेकब के नाम से रह रहा था, जेलर से रोज़ा की शिकायत की थी, क्योंकि उसको भी मालूम हो गया था कि रोज़ा जेल में किसी कैदी से मिलने जाया करती है।

एक दिन सवेरे बार्ले चुपचाप अपनी कोठरी की खिड़की में बैठा कुछ सोच रहा था कि इतने में अचानक जेलर उसकी कोठरी का दरवाज़ा खोलकर अन्दर चला आया। बार्ले के हाथ में काले फूल की एक कली थी। उसको देखते ही जेलर उसकी ओर झपटा और बोला, "यह क्या चीज है तुम्हारे हाथ में? लाओ, इसे मुझे दो?

उसने बार्ले के हाथ से कली छीन ली। फिर अचानक उसकी नज़र कोठरी के एक कोने में एक फूटी हंडिया में लगे हुए पौधे पर पड़ी। उसने लपककर उसको भी उठाने की कोशिश की, लेकिन तब तक बार्ले ने आकर उसके हाथ थाम लिये। दोनों में छीना-झपटी होने लगी। जेलर ने समझा कि यह भी राजकुमार विलियम के खिलाफ इस विद्रोही कैदी का कोई षड्यंत्र है। उसने ज़ोर लगाकर पौधा छीनने की कोशिश की।

बार्ले चिल्ला रहा था, "मेरा पौधा छोड़ दो। यह कुछ और नहीं, सिर्फ फूल का पौधा-भर है। इसको रखने में तुमको क्या एतराज़ है?"

जेलर ने गुस्से में पैर पटकते हुए कहा, "चुप रहो, बहस न करो? लाओ, इसे दे दो मुझे वरना मैं पहरेदार को बुला लूंगा!"

"तुम चाहे जिसे बुला लो, लेकिन इस पौधे को मैं छोड़ नहीं सकता, चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए।" बार्ले ने गरज कर कहा।

लेकिन तब तक जेलर ने पौधे को मिट्टी में से उखाड़ लिया। फिर उसने उसको तोड़-मरोड़कर जूते से कुचल डाला। यह देख-कर बार्ले का खून खौल उठा। उसका मन हुआ कि जेलर की वहीं गरदन मरोड़ दे। वह उसपर वार करने ही जा रहा था कि इतने में रोज़ा दौड़ती हुई वहां चली आई और उसने उन दोनों को छुड़वाकर अलग कर दिया। बार्ले बहुत दुखी स्वर में बोला, "जेलर, सचमुच तुम बड़े नीच आदमी मालूम होते हो। यहां कैदखाने में मैं अकेले अपने पौधों से मन बहलाने की कोशिश किया करता था, इसमें भला तुम्हारा क्या बिगाड़ रहा था?"

रोज़ा ने भी उसकी बात का समर्थन किया और उसने पिता से कहा, "हां बाबा, भला इसमें आपको क्या एतराज़ था? आपने यह अच्छा काम नहीं किया।"

"चुप रहो! तुमको बीच में बोलने की ज़रूरत नहीं है?" जेलर ने अपनी लड़की को डांट दिया। लेकिन वह अपने काम पर कुछ-कुछ लज्जित भी हो रहा था। वह बोला, "अच्छा, तुम दूसरा पौधा लगा सकते हो।"

बार्ले ने निराश स्वर में कहा, "अब मैं तुमको कैसे समझाऊं जिस पौधे को तुमने बराबर कर डाला है, वह एक बेशकीमती पौधा था। उसको मैंने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। तुम हज़ार रुपया दो तो भी तुमको ऐसा पौधा नहीं मिल सकता।"

अचानक जेलर की आंखें खुशी से चमक उठीं, जैसे उसे कोई बड़ी रहस्यपूर्ण बात मालूम हुई हो। वह बोला, "अच्छा, अब मैं समझा! इसीलिए तुम्हें इस पौधे की इतनी फिक्र थी, ज़रूर

इसमें कोई भेद की बात है। शायद राजकुमार के खिलाफ तुमने कोई टोना-टोटका कर रखा है। मैंने तो पहले ही कहा था कि राजकुमार ने तुम्हारी फांसी की सज़ा माफ करके ठीक नहीं किया।"

बार्ले चिढ़कर बोला, "तुम्हारे दिमाग में तो भूसा भरा है। तुम कुछ समझ नहीं सकोगे!"

जेलर बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया। रोज़ा भी अपने पिता के साथ लौट गई। रात में निश्चित समय पर रोज़ा बार्ले से मिलने पहुंची। उसने आते ही कहा, "बार्ले, अब पिताजी तुमको काले फ़ूल का पौधा लगाने से मना नहीं करेंगे। हमारे यहां जो मेहमान आया हुआ है न, उसे जब आज का किस्सा मालूम हुआ तो उसने पिताजी को बहुत फटकारा।"

बार्ले ने आश्चर्य से पूछा, "तो अभी वह मेहमान यहीं टिका हुआ है? क्या वह दिन-भर तुम लोगों के साथ ही रहता है, या कहीं घूमने-फिरने भी जाता है?"

रोज़ा बोली, "नहीं, वह ज़्यादातर हम लोगों के साथ ही रहता है। वह अपना नाम जेकब कहलाता है। जब पिताजी ने उसको बतलाया कि उन्होंने तुम्हारे पौधे को कुचल डाला, तो वह बहुत नाराज़ हुआ और फिर उसने मुझसे कहा कि रोज़ा, उस कैदो के पास दो कलमें और होंगी। अक्सर तीन कलमें रखी जाती हैं। सिर्फ ज़रा-सी तलाशी लेने पर ही तुम लोगों को उसके पास दूसरी कलमें मिल सकती हैं।"

यह सुनकर बार्ले फिर सोच में पड़ गया और बोला, "अच्छा, मिस्टर जेकब ने ऐसा कहा! उसको कैसे मालूम कि दो कलमें और हैं? लगता है, वह कोई बदमाश आदमी है। तुम बता रही थीं न कि उस दिन जब तुम क्यारी तैयार कर रही थीं, तब वह अचानक वहां निकल आया था? लगता है वह दिन भर तुम पर नज़र रखता है। तुम कहां जाती हो, क्या करती हो इसका उसको पूरा पता है। तुम्हारा एक भी काम उससे छिपा नहीं है।"

जेलर ने काले फूल का पौधा तोड़ डाला
और बार्ले को भला-बुरा कहा।

रोज़ा बोली, "हां, मुझे भी कुछ ऐसा ही शक होता है।"

बार्ले ने बहुत चिन्तित स्वर में कहा, "रोज़ा, यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह आदमी असल में तुम पर नज़र नहीं रख रहा है। उसकी नज़रें असल में मेरे काले फूल की कलम पर हैं।"

"हो सकता है, तुम्हारी बात सही हो।"

"अच्छा रोज़ा, तुम इस बात की जांच करने के लिए ऐसा करना कि जेकब को बताकर तुम किसी क्यारी में कोई चीज़ बोने की कोशिश करना और फिर चुपचाप चली आना। वह आदमी ज़रूर तुम्हारा पीछा करेगा और फिर जाकर क्यारी की भी तलाशी लेगा। इस तरह मालूम हो जाएगा कि असल में वह चाहता क्या है। अगर यह तय हो जाए कि वह काले फूल की कलम चाहता है, तो तुमको बहुत होशियारी से रहना होगा। उसको यह ज़रा भी नहीं मालूम होना चाहिए कि एक बची हुई कलम कहां है। तुम उस कलम को संभालकर अपने पास रखना जो पौधा तुमने बो रखा है उसको भी अच्छी तरह बचाकर रखना। अगर तुम्हें यह लगे कि तुम्हारे पिता को या मिस्टर जेकब को तुम पर शक हो गया है तो फिर मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"

यह सुनकर रोज़ा की आंखों में आंसू आ गए। वह अब बार्ले से प्रेम करने लगी थी। दिन में एक बार उसको देखे बिना उसका मन नहीं मानता था। यह सोचकर वह बहुत दुखी हुई कि उसको इस काले फूल के कारण बार्ले से मिलने का मौका अधिक नहीं मिल सकेगा। वह जाते-जाते बोली, "बार्ले, लगता है तुम फूलों को इतना चाहते हो, पौधों से इतना प्रेम करते हो कि तुम्हारे दिल में और किसी के लिए जगह ही नहीं रह गई है!"

बार्ले यह सुनकर धीरे से मुस्करा दिया और रोज़ा वहां से लौट आई।

: 10 :

इसके बाद कई दिनों तक रोज़ा बार्ले से नहीं मिली। बार्ले भी रोज़ा से प्रेम करने लगा था और वह भी उससे बिना मिले रह नहीं पाता था। वह इतना दुःखी रहने लगा कि उसने धीरे-धीरे खाना-पीना कम कर दिया। जब रोज़ा को अपने पिता से यह खबर मिली तो वह बेचैन हो उठी। वह जानती थी कि बार्ले के दुःख का क्या कारण है। वह असल में यह जानने के लिए चिन्तित था कि उसका पौधा अब कितना बड़ा हुआ है और उसका क्या हाल है।

अन्त में एक दिन चुपके से रोज़ा बार्ले से मिलने पहुंची। वह बोली, "बार्ले, तुम्हें इस तरह फिक्र नहीं करनी चाहिए। तुम्हारा पौधा सही-सलामत है और बड़े मज़े में बढ़ रहा है।"

बार्ले बोला, "मुझे पौधे की तो चिन्ता है ही, लेकिन इस बीच तुमने आना क्यों बन्द कर दिया था ? तुमसे मिल न पाने के कारण मैं बहुत दुःखी रहने लगा हूं।"

"मैंने आना इसलिए बन्द कर रखा था कि पिताजी को या मिस्टर जेकब को कोई शक न हो। बार्ले, हम दोनों को बहुत संभलकर रहना चाहिए। जेकब के बारे में तुम्हारा सन्देह बिलकुल ठीक निकला। सचमुच वह तुम्हारा पौधा चुराने की फिराक में है। खैर, पौधा उसके हाथ नहीं लग सकेगा, क्योंकि उसको मैंने अपने कमरे में लगा रखा है। वहां तक जेकब पहुंच नहीं सकेगा, लेकिन वह काले फूल की एक कलम पाने को ज़मीन, आसमान एक करने के लिए तैयार है। वह पिताजी से कई बार कह चुका है कि तुम्हारी कोठरी में तलाशी ली जाए।"

और सचमुच अचानक एक दिन सवेरे जेलर तीन-चार

सिपाहियों को लेकर बार्ले की कोठरी की तलाशी लेने के लिए आ धमका। उसने सिपाहियों को हुक्म दिया, "तलाशी शुरू करो।"

सिपाहियों ने कोठरी का कोना-कोना छान मारा। फिर बार्ले का बिस्तर देखा, उसके कपड़े टटोले और उसकी जेब की तलाशी ली। लेकिन उनके हाथ कुछ नहीं लग सका। जेलर को खाली हाथ लौट जाना पड़ा।

तीन-चार दिन बाद एक दिन रात में रोज़ा ने आकर बार्ले की कोठरी का दरवाज़ा धीरे से थपथपाया। वह अपने एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में छोटे-से गमले में काले फूल का पौधा लिये थी। आते ही वह बोली, "बार्ले, देखो, तुम्हारे पौधे में फूल आ गया है! देखो, कैसी काजल की तरह काली कली खिली है!"

सचमुच काली कली बड़ी सुन्दर लग रही थी। बार्ले उसको देखता ही रह गया। मारे खुशी के वह फूला नहीं समा रहा था। उसकी जिंदगी-भर की मेहनत सफल हो गई थी। कली को देखने से ही मालूम हो रहा था कि यह फूल बहुत बड़ा निकलेगा।

बार्ले ने रोज़ा से कहा, "अच्छा रोज़ा, अब एक मिनट को भी देर न करो। तुम फौरन अंतर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रदर्शनी के अध्यक्ष के नाम एक चिट्ठी लिखो। उसमें लिखो कि काला फूल यहां उगाया गया है। फूल बिलकुल काजल की तरह काला है इस चिट्ठी को तुम किसी आदमी के हाथ तुरन्त भिजवाओ। चिट्ठी में तुम लिख देना कि मैं जेलर की बेटी हूं और दूसरे कैदियों की तरह मैं भी अपने पिता की एक तरह से बन्दी हूं—उनकी आज्ञा के बिना मैं कोई काम नहीं कर सकती। मैं पौधे को आपको दिखाने के लिए नहीं ला सकती, इसलिए कृपया आप खुद ही इसको यहां से ले जाने का कष्ट करें।

रोज़ा फौरन वहां से लौट आई। उसने अध्यक्ष के नाम पहले से ही एक पत्र लिख रखा था।

लेकिन उधर जेकब भी चुप नहीं बैठा था। उसने जेलर को एक तरह से अपनी मुट्ठी में कर लिया था और जेलर उससे रोज़ा का विवाह करने की सोच रहा था।

जेकब बराबर रोज़ा पर नज़र रखता था। उसको पूरा शक था कि रोज़ा बार्ले की मदद कर रही है। वह यह भी जानता था कि रोज़ा के ही ज़रिये बार्ले से काले फूल की कलमें प्राप्त की जा सकती हैं। उस दिन जब उसकी क्यारी में कुछ नहीं मिला, तो उसे शक हुआ कि ज़रूर रोज़ा ने अपने कमरे में ही कोई पौधा लगा रखा होगा।

उसने जेलर से कह-सुनकर रोज़ा के कमरे के सामने वाला कमरा अपने रहने के लिए ठीक करा लिया। वहां से वह चुपके-चुपके अपनी दूरबीन के ज़रिये रोज़ा के कमरे का भेद लेता रहता था। उसने देखा कि रोज़ा एक गमले को सुबह से शाम तक अपनी खिड़की में रखती है और दिन-भर उसकी देखभाल किया करती है। जेकब को अब विश्वास हो गया कि निश्चय ही उस गमले में रोज़ा ने बार्ले के कहने पर काले फूल की कलम लगा रखी है। वह उसको प्राप्त करने की तरकीब सोचने लगा।

सबसे पहले जेकब ने पता लगाया कि रोज़ा के कमरे में दोहरा ताला पड़ा रहता है और उसकी चाबी वह हमेशा अपने साथ ले जाती है। जब रोज़ा बार्ले से मिलने के लिए चली जाती थी, तो जेकब चुपचाप उसके दरवाज़े पर पहुंच जाता था और उसका ताला खोलने की कोशिश करता था। इस बीच उसने दर्जनों चाबियां इकट्ठी कर ली थीं।

और अन्त में एक दिन एक चाबी ताले में लग गई। ताला खुल गया। अब जेकब रोज़ चुपके-चुपके रोज़ा की गैरहाज़िरी में जाता था और काले फूल के पौधे को बढ़ते हुए देखता था। फूलों की खेतीबारी का उसे बड़ा पूरा ज्ञान था। वह अच्छी तरह जानता था कि किसी पौधे में कली कब लगेगी और कब वह खिल कर फूल बनेगी।

कली जिस दिन खिलने वाली थी, उसका उसने ठीक अंदाज़ लगाया था। उस दिन शाम को उसने जेलर को अपने यहां खाना खाने के लिए बुलाया और उसको खूब शराब पिलाई। शराब पीकर जेलर लगभग बेहोश हो गया। जेकब ने अब रोज़ा का पीछा शुरू किया। वह छिपकर उसके कमरे के पास बैठ गया।

कुछ देर बाद रोज़ा बार्ले से मिलने के लिए निकली। उसके एक हाथ में छोटी-सी लालटेन थी और दूसरे हाथ में काले फूल का पौधा था। वह बार्ले की कोठरी की तरफ बढ़ने लगी। जेकब भी दबे पांव उसके पीछे-पीछे बार्ले की कोठरी तक जा पहुंचा। वहां पर कान लगाकर सब कुछ सुनता रहा। उसने सुन लिया, कि एक आदमी चिट्ठी लेकर अंतर्राष्ट्रीय पुष्प प्रदर्शनी के अध्यक्ष के पास हार्लेम जाएगा और काले फूल के बारे में सूचना देगा।

जब रोज़ा वहां से लौटी तो जेकब भी उसके पीछे लौट आया और फिर से आकर उसकी कोठरी के पास छिपकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि रोज़ा ने अपने कमरे में जाकर चिट्ठी को फिर से लिखा और उसको लिफाफे में रखा, फिर दीया बुझाकर वह अपने कमरे के बाहर निकल आई।

रोज़ा शायद बार्ले की चिट्ठी किसी को देने जा रही थी। जेकब ने इस मौके का लाभ उठाया। जब रोज़ा चली गई तो वह कमरे का ताला खोलकर अन्दर घुस गया और काले फूल का पौधा चुरा लाया।

कुछ देर बाद रोज़ा लौटकर आई तो उसने देखा कि पौधा गायब है। वह उसी समय दौड़ी-दौड़ी बार्ले के पास पहुंची। तब तक सवेरा हो गया था। बार्ले उसको देखकर चौंक पड़ा, क्योंकि इस समय वह कभी भी उससे मिलने नहीं आती थी। रोज़ा बहुत घबराई हुई थी। वह बोली, "बार्ले! कोई हमारा पौधा चुरा ले गया है।" फिर उसने सारा किस्सा बता दिया।

"बार्ले कोई हमारा पौधा चुरा ले गया है।" रोज़ा ने घबराकर सूचना दी।

यह सब सुनकर बार्ले बहुत परेशान हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि पौधा कौन चुरा सकता है। वह बोला, "तो क्या तुम ताला लगाकर चाभी वहीं छोड़ गई थीं?"

रोज़ा सिसकते हुए बोली, "नहीं, नहीं, चाभी तो बराबर मेरे हाथ में थी। मुझको देर भी ज्यादा नहीं हुई। मैं सीधे अपने जान-पहचान के एक सिपाही के पास गई। वह तुरन्त तैयार हो गया और मेरी चिट्ठी लेकर वहां से रवाना हो गया। उसके बाद मैं अपने कमरे में लौट आई। अन्दर आकर मैंने देखा कि पौधा गायब था!" रोज़ा की सिसकियां बढ़ती जा रही थीं।

बार्ले कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला, "रोज़ा, हम लोगों को लूट लिया गया है! मेरी तो ज़िन्दगी-भर की कमाई चली गई! लेकिन ठहरो, मैं अच्छी तरह जानता हूं यह चोरी किसने की है! यह जेकब का ही काम हो सकता है। हम लोगों को उसका पीछा करना चाहिए और उसको पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए। रोज़ा, तुम ज़रा मेरी कोठरी का दरवाज़ा खोल दो। देखो, अभी मैं उस बदमाश को पकड़ता हूं और उससे सारी बात कबूलवा लेता हूं।"

"लेकिन मैं दरवाज़ा खोल कैसे सकती हूं? चाभी तो पिताजी के पास है।"

बार्ले ने गुस्से से होंठ चबाते हुए कहा, "तुम्हारा पिता भी इस षड्यन्त्र में शरीक है। उसने पूरी तरह से जेकब की मदद की है। मैं उस दुष्ट की भी जान ले लूंगा।"

बार्ले बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था। उधर सवेरा भी हो गया था। ज़ेलर कैदियों की देखभाल के लिए निकल पड़ा था। अचानक उसने बार्ले की आवाज़ सुनी और वह चुपचाप ज़ीने से ऊपर चढ़ आया। आते ही उसने रोज़ा की कलाई पकड़ ली और उसको डांटते हुए कहा, "मूर्ख लड़की, तू मेरे काम में दखल देती है। तुझको मैंने मना किया है न, कि तू कैदियों से न मिला कर।" फिर उसने बार्ले की ओर मुड़कर कहा, "क्यों तुम तो बड़े

सीधे बनते रहे हो! फूल उगाना और पढ़ना-लिखना ही तुम्हारा काम रहा है, और तुम मेरी जान लेना चाहते हो! तुम्हारी इतनी हिम्मत! तुमने मेरी बेटी को भी बरगला रखा है। ठहर जाओ, मैं तुम्हारी अक्ल दुरुस्त कर दूंगा।"

रोज़ा ने मौका देखकर पिता की मुट्ठी से अपना हाथ छुड़ा लिया और वह रोती हुई ज़ीने से नीचे भाग गई। जेलर भी उसके पीछे-पीछे बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया।

उधर इज़ाक पौधे को लेकर काफी दूर निकल गया था। पौधे को चुराने के बाद वह उसको अपने लबादे में छिपाकर उसी दरवाज़े से भाग निकला, जिससे रोज़ा जेल के सिपाही से मिलने के लिए बाहर निकली थी। उसने पहले से घोड़ागाड़ी का इन्तज़ाम कर रखा था। वह तुरन्त उसमें सवार हुआ और कुछ ही देर बाद शहर से बाहर निकल गया।

दूसरे दिन सवेरे तक इज़ाक हार्लेम जा पहुंचा। वह बुरी तरह थक गया था, लेकिन अपने काम में सफल हुआ। काले फूल का पौधा अब उसके कब्ज़े में था। अब वह आसानी से प्रतियोगिता में भाग ले सकता था और इनाम जीत सकता था। कहीं चोरी का पता न लग जाए, इसलिए उसने उस गमले को तोड़कर फेंक दिया और पौधे को मिट्टी सहित निकालकर एक दूसरे गमले में लगा दिया। उसने अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रदर्शनी के अध्यक्ष के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें उसने सूचित किया कि मैंने काले फूल का एक सुन्दर पौधा तैयार किया है। उसको लेकर मैं हार्लेम आ पहुंचा हूं। चिट्ठी को भिजवाकर उसने एक अच्छे होटल में अपना डेरा जमाया और फिर वह अध्यक्ष के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

: 11 :
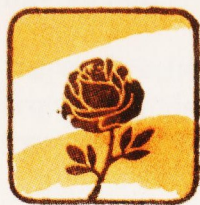
बार्ले के पास से लौटकर रोज़ा सीधे अपने कमरे में गई। कुछ देर तक वह चुपचाप बैठी सोचती रही। अचानक उसने निश्चय किया कि वह बार्ले को उसका पौधा ज़रूर लाकर देगी, वरना उसको अपना चेहरा नहीं दिखाएगी।

कुछ देर बाद वह किसी निश्चय पर पहुंच गई। उसने फौरन एक गठरी में अपनी ज़रूरी चीज़ें रखीं और यात्रा की तैयारी शुरू की। उसके पास लगभग तीन सौ रुपये थे। उनको भी अपने साथ ले लिया। उसने काले फूल की तीसरी कलम बिस्तर के नीचे से निकाली और उसको अपनी जेब में रख लिया। फिर दरवाज़े का ताला बन्द करके वह सीधी घोड़ों के अस्तबल में पहुंची।

अस्तबल के रखवाले से उसने एक बहुत अच्छा घोड़ा देने के लिए कहा। रखवाला उसको अच्छी तरह जानता था। वह यह भी जानता था कि जेलर की लड़की को घुड़सवारी का शौक है। उसने फौरन एक अच्छा-सा घोड़ा निकालकर दिया। रोज़ा फौरन घोड़े पर सवार होकर हार्लेम की ओर चल पड़ी।

कुछ ही घंटे में उसने रास्ते में उस सिपाही को पकड़ लिया जो उसका सन्देश लेकर हार्लेम जा रहा था। उसने उसको सारी स्थिति संक्षेप में समझा दी। वह हार्लेम में उसका साथ देने के लिए राजी हो गया। अब दोनों साथ-साथ तेज़ी से आगे बढ़े।

उधर सवेरे जब रोज़ा चाय पीने के लिए नहीं आई तो जेलर ने उसको बुलाने के लिए एक आदमी भेजा। उसने आकर बताया कि रोज़ा के कमरे में बाहर से ताला बन्द है। जेलर को विश्वास नहीं हुआ। वह खुद देखने पहुंचा। उसने सोचा कि शायद रोज़ा

अन्दर है और उसने बाहर से ताला बन्द कर रखा है। उसने फौरन लुहार को बुलाकर ताला तुड़वाया। लेकिन अन्दर भी उसे रोज़ा नहीं मिली तो उसका माथा ठनका।

अब जेलर ने ज़ोर-शोर के साथ रोज़ा को खोजना शुरू किया। कई आदमियों को इधर-उधर दौड़ाया गया, लेकिन रोज़ा नहीं मिली। इसके बाद उसने अपने मेहमान जेकब की तलाश की। लेकिन जेकब भी गायब था। अब जेलर को यह समझते देर नहीं लगी कि जेकब ही रोज़ा को लेकर भाग गया है।

जेलर को इसका कोई विशेष दुःख नहीं था। वह तो खुद ही जेकब के साथ रोज़ा की शादी करना चाहता था। उसे इसी बात पर आश्चर्य हो रहा था कि आखिर जेकब रोज़ा को भगाकर क्यों ले गया? इतने दिन मेरा मेहमान रहने के बाद वह अचानक बिना मुझसे कुछ कहे-सुने यहां से चुपचाप क्यों चला गया?

उधर रोज़ा हार्लेम पहुंच गई। वह जेकब से सिर्फ चार ही घंटे बाद वहां पहुंची थी। पहुंचते ही वह सीधे अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रदर्शनी के अध्यक्ष से मिलने के लिए उनके आफिस में जा पहुंची। लेकिन दरबान ने उसको अन्दर घुसने से मना कर दिया। रोज़ा बोली, "जाओ, और अध्यक्ष जी से कहो कि मैं काले फूल के बारे में उनसे बात करना चाहती हूं।"

अध्यक्ष ने तुरन्त रोज़ा को अपने कमरे में बुलवाया। अध्यक्ष ने कहा, "कहिए देवी जी, आप काले फूल के बारे में कुछ कहना चाहती हैं?"

रोज़ा बोली, "जी हां, मैं काले फूल के बारे में ही बात करना चाहती हूं, लेकिन मुश्किल यह है कि मेरा पौधा चुरा लिया गया है।"

"क्या तुम चोर को जानती हो?"

"मेरा एक आदमी पर शक है, लेकिन अभी मैं किसी को चोर

सिद्ध नहीं कर सकती हूं।"

अध्यक्ष ने कहा, "अगर पौधा तुम्हारे पास से चोरी हो गया है तो इतना ज़ाहिर है कि अभी चोर यहां से दूर नहीं गया होगा। अभी दो घंटे पहले ही मैंने तुम्हारे मालिक के पास काले फूल का पौधा देखा है।"

रोज़ा ने आश्चर्य से कहा, "यह आप क्या कर रहे हैं! मेरे मालिक के पास! लेकिन मैं तो किसी के यहां काम नहीं करती हूं, क्योंकि मैं जानती हूं कि वैसा फूल अभी तक कोई तैयार नहीं कर सका है।"

"तो क्या तुम मिस्टर इज़ाक बोक्सटेल के यहां काम नहीं करती हो? लेकिन वह पौधा तो मैंने उन्हीं के पास देखा है। दो घंटे बाद वह पौधा यहां कमेटी में पेश किया जाएगा और कमेटी ही उस पर इनाम देने का फैसला करेगी।"

रोज़ा ने कुछ चिन्तित स्वर में कहा, "लेकिन साहब, यह इज़ाक बोक्सटेल कौन है? अच्छा, ज़रा यह तो बताइए, इस आदमी की शक्ल-सूरत कैसी है। क्या यह दुबला-पतला और गंजे सिरवाला आदमी है? इसकी आंखें धंसी हुई हैं और यह झुककर चलता है? इसके पांव भी कुछ टेढ़े-से हैं?"

"हां, तुमने मिस्टर इज़ाक का सही चित्र खींचा है। वे बिलकुल ऐसे ही लगते हैं। क्या तुम उनको जानती हो?"

यह सुनकर रोज़ा की आंखें चमक उठीं। वह बोली, "अच्छा, यह तो बताइए कि वह गमला कैसा था? क्या वह सफेद रंग का गमला है जिस पर तीन तरफ से पीले-पीले फूल बने हैं?"

अध्यक्ष बोला, "यह मुझे कुछ ठीक से याद नहीं। मैंने फूल को ही गौर से देखा था। गमले पर मैंने कोई ध्यान नहीं दिया।"

रोज़ा ने उसका हाथ थामते हुए कहा, "तो साहब आप यह तय समझिए कि वह मेरा ही पौधा है। उसको मेरे पास से चुराया गया है। मेरा पौधा मुझको मिलना चाहिए! मैंने उसको बनाया और तैयार किया है। उस पौधे पर और किसी का हक नहीं हो सकता।"

अध्यक्ष ने धीरे से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा, "देखिए देवी जी, भला इसमें मैं क्या कर सकता हूं! मिस्टर इज़ाक बोक्सटेल एक होटल में ठहरे हुए हैं। होटल का पता आपको बता देता हूं। आप उनके पास जाइए और जो कुछ तय करना हो, कीजिए।"

रोज़ा ने होटल का पता मालूम किया और फिर दूसरे ही क्षण वह होटल के लिए रवाना हो गई। अचानक रास्ते में उसे एक बात सूझी और वह फिर लौटकर अध्यक्ष के पास आई। उसने कहा, "अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक प्रार्थना करती हूं कि आप इज़ाक नाम के इस आदमी को, जिसको मैं अच्छी तरह जानती हूं और जिसका नाम जेकब है, अपने सामने बुलवाएं। मैं आपसे वादा करती हूं कि अगर वह कोई दूसरा आदमी हुआ या मैं अपने पौधे को पहचान न सकी, तो उसका पौधा उसके कब्ज़े में रहेगा और मैं आपको विशेष कष्ट नहीं दूंगी।"

अध्यक्ष उसकी बात पर विचार करने लगा। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि अचानक बाहर शोर होने लगा। जय-जयकार और नारों की आवाज़ आने लगी। वह फौरन उठकर बाहर भागा। रोज़ा भी उसके पीछे-पीछे गई।

लेकिन तब तक भीड़ मकान के दरवाज़े तक आ गई थी। भीड़ में सबसे आगे राजकुमार विलियम चल रहा था और लोग उसकी जय बोल रहे थे। अध्यक्ष ने आगे बढ़कर राजकुमार का स्वागत किया और कहा, "राजकुमार, आपने आज यहां पधारकर हम लोगों पर कृपा की है। आइए, अन्दर चलिए।"

राजकुमार ने अन्दर आते हुए कहा, "मैं सच्चा हालैण्डवासी हूं। मुझको फूलों का बड़ा शौक है। मैं पास के शहर लीडेन में दौरे पर आया हुआ था। इसी बीच मुझे खबर मिली कि हार्लेम में काले फूल का पौधा आ गया है। मैं इसी की जानकारी हासिल

करने के लिए यहां आ पहुंचा हूं। क्या पौधा तुम्हारे पास है ?"

अध्यक्ष ने कहा, "नहीं, सरकार, मुझे बड़ा अफसोस है। इसमें एक झगड़ा पड़ गया है। बात यह कि दौरड्रेख्त नगर का एक आदमी जिसका नाम इज़ाक है, पौधा लेकर यहां आया है और होटल में ठहरा है, लेकिन इसी बीच यह स्त्री मेरे दफ्तर में पहुंची और कहने लगी कि वह पौधा मेरा है। अब मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कि क्या किया जाए ? आप हमारे राजा हैं। आप ही फैसला कीजिए।" यह कहकर अध्यक्ष ने रोज़ा की ओर संकेत किया और कहा, "सरकार, यही है वह लड़की।"

राजकुमार ने रोज़ा की ओर देखा और फिर अध्यक्ष से कहा, "ठीक है, आप इससे सवाल पूछिए और फौरन एक आदमी को भेजकर मिस्टर इज़ाक को यहां बुलवाइए।"

तुरन्त एक आदमी इज़ाक को लाने के लिए रवाना हो गया। अध्यक्ष ने रोज़ा से प्रश्न करना शुरू कर दिया, "तुम यह बात किस आधार पर कहती हो कि काले फूल की मालिक तुम ही हो ?"

"इसका आधार यह है कि मैंने उस पौधे को अपने कमरे में एक गमले में बोया था और बड़ा किया था। मैं लूवेन्स्टीन नगर के किले के जेलर की लड़की हूं।"

अध्यक्ष ने कहा, "तो क्या तुम बहुत दिनों से बागवानी का काम करती हो ? फूलों की खेती का तुम्हें अच्छा अभ्यास होगा ?"

"जी नहीं, इसका मुझे कोई अनुभव नहीं है। बात असल में यह है कि काला फूल मैंने नहीं, जेल के एक कैदी ने तैयार किया था।"

यह सुनकर राजकुमार ने बीच में ही आश्चर्य से पूछा, "क्या ? जेल के कैदी ने फूल का पौधा लगाया था ?"

रोज़ा ने ज़रा कांपती हुई आवाज़ में कहा, "सरकार, वह एक कैदी है जिसे आजन्म कैद की सज़ा मिली है। मैं जानती हूं कि इस तरह मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है।"

इस पर अध्यक्ष ने बीच में ही कहा, "और क्या, तुमने सचमुच ही बड़ा गम्भीर अपराध किया है ! उस किले में कड़ी कैद की सज़ा वाले कैदियों को ही रखा जाता है ! और उन्हें किसी बात की आज़ादी नहीं दी जाती है। लेकिन तुमने एक जेलर की लड़की होने के नाते अपनी स्थिति से लाभ उठाया और आजीवन कारावास की सज़ा पाए हुए एक कैदी को जेल में ही बागवानी करने का मौका दिया ! यह सचमुच बहुत बड़ा अपराध है।"

रोज़ा ने कांपती हुई आवाज़ में कहा, "जी हां, साहब, मुझसे यह गलती हुई। मैं उस कैदी से लगभग प्रतिदिन मिला करती थी।"

राजकुमार विलियम ने रोज़ा को इस तरह घबराते हुए देखा तो बीच में ही कहा, "इस बारे में सोच-विचार करने का काम मेरा और मेरी सरकार का है। पुष्प-प्रदर्शनी के सदस्यों को इससे कोई मतलब नहीं। आप लोगों का काम तो काले फूल के पौधे पर विचार करना है। आप लोग उसी पर विचार कीजिए। हां रोज़ा, तुम अपनी बात जारी रखो।"

इस तरह राजकुमार से आश्वासन पाने के बाद रोज़ा ने पिछले तीन-चार महीनों की घटनाओं को विस्तार के साथ कह सुनाया। उसने बताया कि किस तरह काले फूल की एक कलम को जेलर ने गुस्से में आकर तोड़ डाला था। फिर किस तरह दूसरी कलम को लगाया गया और किस तरह उसने और बार्ले ने उत्सुकता से उसकी देखभाल की। फिर जैसे ही उसमें फूल तैयार हुआ कि एक घण्टे बाद ही कोई उसको चुरा ले गया।

फिर रोज़ा ने यह भी बताया कि वह बार्ले को हेग के कैदखाने से ही जानती थी और जब बार्ले को लूवेन्स्टीन के किले में भेज दिया गया तो, उसने ही कोशिश करके अपने पिता की बदली हेग से लूवेन्स्टीन के जेलखाने में करवा ली।

इसी बीच दो सिपाहियों के साथ जेकब ने कमरे में प्रवेश

किया। जेकब के हाथ में काले फूल का वही पौधा था। उसने गमला लाकर राजकुमार के सामने रख दिया। राजकुमार बड़े गौर से फूल को देखने लगा। जेकब को देखते ही रोज़ा ने चिल्लाकर कहा, "यही वह आदमी है! यह पौधा मेरा है! मैंने उसको रात-दिन मेहनत करके उगाया है!" और वह आंसू बहाने लगी।

जेकब घबराकर रोज़ा और राजकुमार की तरफ देखने लगा। घबराहट और भय के मारे उसके होंठ कांपने लगे। लेकिन फिर किसी तरह कोशिश करके उसने अपने आपको संभाल लिया। राजकुमार ने उससे पूछा, "मिस्टर जेकब, इस काले फूल के पौधे को उगाने की तरकीब सबसे पहले तुमने ही मालूम की, तुम्हारा यही कहना है न?"

जेकब ने अपनी आवाज़ को बदलते हुए कहा, "हां, सरकार, यह पौधा मैंने ही तैयार किया है।"

राजकुमार ने कहा, "लेकिन मिस्टर जेकब, इस लड़की का कहना है कि इस पौधे को इसने तैयार किया है। क्या तुम इस लड़की को जानते हो?"

"नहीं हुज़ूर, मैं नहीं जानता।"

राजकुमार ने रोज़ा से पूछा, "क्यों लड़की, क्या तुम मिस्टर जेकब को जानती हो?"

रोज़ा बोली, "हां, सरकार, मैं इस आदमी को बड़े मज़े में जानती हूं। राजकुमार, यह आदमी लूवेन्स्टोन किले में मेरे पिता के यहां मेहमान बनकर रहता था। इसने अपना नाम वहां पर जेकब ही बताया था। मुझे पता नहीं कि इसका असली नाम क्या है?"

राजकुमार ने जेकब से पूछा, "क्यों, इस सम्बन्ध में तुमको क्या कहना है?"

जेकब ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा, "सरकार, मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि मैं लून्वेस्टीन के किले में रहा हूं,

लेकिन मैं इस बात से साफ इन्कार करता हूं कि मैंने काले फूल का पौधा चुराया है। सच मानिए, इस पौधे को मैंने खुद तैयार किया है।"

रोज़ा ने गुस्से में भरकर कहा, "बेईमान! झूठे कहीं के! तुमने यह पौधा चुराया है और मेरे कमरे से चुराया है!"

"बिल्कुल गलत। तुम झूठ बोल रही हो।" जेकब ने कहा।

रोज़ा बोली, "अभी मालूम हुआ जाता है कि कौन झूठ बोल रहा है। क्या तुम इस बात से इन्कार करते हो कि जब पहले दिन मैंने बगीचे में क्यारी तैयार की थी, तब तुमने मेरा पीछा नहीं किया था? इसके बाद क्या तुम बराबर मेरे कामों पर नज़र नहीं रखते थे?"

जेकब उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका और उसने राजकुमार की ओर मुड़कर कहा, "हुज़ूर, यह सब गलत है। मैं पिछले बीस साल से अपने गांव में फूलों के पौधे तैयार करता रहा हूं। बागवानी में मुझे कुछ प्रसिद्धि भी मिली है। यह लड़की मुझ पर झूठा इल्ज़ाम लगा रही है। लूवेन्स्टीन के किले में इसका एक प्रेमी बन्द है। उसी से मिल-जुलकर मुझको बरबाद करने की इसने योजना बनाई है। सरकार, उस कैदी का नाम कार्नेलियस वान बार्ले है और उसको कुछ गुप्त कागज़-पत्रों को अपने पास रखने के कारण सज़ा मिली है।"

रोज़ा ने राजकुमार की ओर हाथ जोड़कर कहा, "सरकार बार्ले बिल्कुल निर्दोष है। आपने बड़ी कृपा करके उसकी फांसी की सजा रद्द की थी और उसे आजीवन कैद की सज़ा दी थी। लेकिन हुज़ूर, मैं अब भी कहती हूं कि बार्ले बिलकुल निर्दोष है। जिन गैर कानूनी चिट्ठियों को उसके घर से बरामद किया गया था, उसके बारे में उसको कुछ भी पता नहीं था। उसके चाचा ने कागजों का एक पुलिन्दा उसको रखने के लिए दिया था। बाद में पता चला कि वे गैरकानूनी पत्र थे।"

राजकुमार ने उसको बीच में ही रोकते हुए कहा, "मैं कह

चुका हूं न कि ये राजमहल के मामले हैं। इसके बारे में बोलने का तुमको हक नहीं। इस समय तो हमें काले फूल के पौधे के बारे में बात करनी है। सारी बातें सुनकर मैं इस नतीजे पर पहुचा हूं कि तुमने एक बहुत बड़ी गलती की है और एक षड्यन्त्रकारी का साथ दिया है। उस कैदी ने तुमको बहकाया था। इसके लिए उसको सज़ा दी जाएगी। अच्छा, मिस्टर जेकब, क्या तुम यह सिद्ध कर सकते हो कि पौधा तुम्हारा ही है ?"

जेकब ने कहा, "जी हां, यह मेरा ही पौधा है।"

रोज़ा ने उसको डांटते हुए कहा, "तुम फिर झूठी बात बता रहे हो ! अच्छा बताओ, कितनी कलमें थीं और वे कहां हैं ?"

जेकब बोला, "इसकी तीन कलमें थीं। उनमें से एक खराब हो गई और दूसरी से यह पौधा तैयार हुआ है।"

"लेकिन तीसरी कलम का क्या हुआ ?" रोज़ा ने पूछा।

जेकब कुछ परेशानी में पड़ गया। लेकिन फिर बोला, "तीसरी कलम ! वह मेरे घर में रखी हुई है !"

रोज़ा ने अपनी जेब से पौधे की तीसरी कलम निकालते हुए कहा, "सरकार, यह रही इस पौधे की तीसरी कलम। यह आदमी बिलकुल झूठ बोल रहा है। जब बार्ले को फांसी पर चढ़ाया जाने वाला था तो उसने इस कागज़ में लपेटकर काले फूल के पौध की तीनों कलमें मुझे सौंपी थीं। उन्हीं में से यह एक कलम बची हुई है, और ज़रा इस कागज़ को पढ़िए। सरकार, इससे साफ जाहिर होता है कि बार्ले निर्दोष है। यह वह पत्र है जो उसके चाचा ने उसको लिखा था कि कागज़ का जो बण्डल मैंने तुमको दिया है उसको बिना खोले और बिना पढ़े फौरन जला दो। इन कागज़ों को अपने पास रखना बहुत ख़तरनाक है। इसके कारण तुमको मौत की सजा मिल सकती है।—हुज़ूर जब बार्ले को यह चिट्ठी मिली तो वह कागज़ों के उस पुलिन्दे को जलाने की कोशिश कर रहा था कि इसी बीच उसको गिरफ्तार कर लिया

गया।"

राजकुमार ने चिट्ठी लेकर पढ़ी। उस पर कार्नेलियस-द-विट के हस्ताक्षर थे और 20 अगस्त, 1672 की तारीख पड़ी थी। अन्त में राजकुमार ने कहा, "अच्छा, मिस्टर जेकब, तुम जाओ। हम मामले पर गौर करेंगे।"

जेकब के चले जाने के बाद राजकुमार ने पुष्प-प्रदर्शनी के अध्यक्ष से कहा, "मिस्टर हेरीसन, आप इस लड़की की और काले फूल के पौधे की हिफ़ाजत का इन्तज़ाम कीजिए। मैं सारे मामले पर विचार करूंगा।"

: 12 :

रोज़ा और जेकब के जेल से गायब होने के बाद तीसरे दिन की बात है कि बार्ले अपनी कोठरी की खिड़की से बाहर का दृश्य देख रहा था और आंसू बहा रहा था। उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था और भविष्य अन्धकारमय हो गया था।

अचानक इसी बीच जेलर ने हाथ में एक डंडा लेकर उसकी कोठरी में प्रवेश किया। उसने बार्ले के सिर पर डंडा तानते हुए कहा—"बार्ले, आज तुम मुझसे बच नहीं सकोगे! आज मैं तुमसे तुम्हारा जुर्म कबूल करवा के ही रहूंगा।"

बार्ले पहले घबराया, लेकिन फिर उसने उछल कर जेलर के हाथ से डंडा छीन लिया और कहा, "जेलर साहब, क्या आप पागल हो गये हैं! मुझसे कौन-सा जुर्म कबूल कराना चाहते हैं?"

जेलर मारे गुस्से के आगबबूला हो रहा था। वह बोला, "तुम्हारी यह हिम्मत! तुमने मेरे हाथ से डंडा छीन लिया! लेकिन याद रखो, मैं अब भी खाली हाथ नहीं। मैं आज तुम्हारी जान ले लूंगा!" और उसने अपनी जेब से एक लम्बा-सा चाकू निकाल लिया। फिर वह चाकू से बार्ले को धमकाते हुए बोला, "बताओ, मेरी लड़की कहां है? जल्दी बोलो!"

बार्ले ने आश्चर्य से कहा, "तुम्हारी लड़की! भला मुझे क्या मालूम कि वह कहां है?"

"तुम सब जानते हो। तुमने ही उसे बहकाया है और कहीं रवाना कर दिया है। बताओ, वह कहां है?" यह कहकर वह बार्ले पर चाकू से वार करने के लिए झपटा। लेकिन बार्ले ने डंडे से उसके हाथ पर वार किया और चाकू उसके हाथ से नीचे गिर

पड़ा। फिर उसने जेलर को पीटना शुरू किया। जेलर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा और दया की भीख मांगने लगा। उसकी आवाज़ सुनकर छोटा जेलर दो-एक सिपाहियों के साथ दौड़ा आया। उन लोगों ने बार्ले को पकड़ लिया और उसके हाथ से डंडा छीन लिया।

बार्ले के खिलाफ यह रपट लिखी गयी कि उसने जेलर पर हमला किया और उसको जान से मार डालने की कोशिश की। इसके बाद जेल में ही बार्ले के खिलाफ मुकदमा चलाने की तैयारी की गई। जेल में बलवा करने के आरोप में उसको गोली से उड़ा देने की सजा दी जा सकती थी।

लेकिन इसी बीच एक सरकारी अफसर जेल में पहुंचा। उसको बार्ले की कोठरी में ले जाया गया। अन्दर जाते ही उसने पूछा, "क्या तुम्हारा ही नाम डाक्टर कार्नेलियस वान बार्ले है?"

बार्ले बोला, "हां, मैं ही बार्ले हूं।"

"तो चलो मेरे साथ!"

और वह अधिकारी बार्ले को जेल से बाहर ले आया। बाहर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी। बार्ले को उसी में बैठाया गया और उसे सीधे वहां से रवाना कर दिया गया। गाड़ी रात-भर चलती रही। बार्ले की समझ में कुछ नहीं आया। गाड़ी के आस-पास चार घुड़सवार चल रहे थे। बार्ले ने बार-बार उन लोगों से पूछने की कोशिश की, लेकिन किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सवेरा होते-होते गाड़ी हार्लेम नगर में पहुंच गई, जहां अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रदर्शनी हो रही थी।

उधर राजकुमार विलियम ने इस पूरे मामले पर विचार करना शुरू कर दिया था। एक दिन राजकुमार ने रोज़ा को अपने यहां बुलाया और उससे विस्तार से सारे मामले के बारे में बातचीत की। जब रोज़ा ने राजकुमार को बताया कि वह बार्ले से प्रेम करती है तो राजकुमार ने कहा, "तुम ऐसे आदमी से प्रेम क्यों करती हो, जिसको ज़िन्दगी-भर जेल में ही रहना है और

रोज़ा ने राजकुमार को बताया कि वह बार्ले से प्रेम करती है। उसने शर्म से अपनी आंखें झुका लीं।

जेल में ही मरना है ? क्या तुम आजन्म कैद की सज़ा पाए हुए एक कैदी की पत्नी बनना चाहती हो ?"

रोज़ा ने अपनी आंखें नीची कर लीं और सिर झुकाकर कहा, "सरकार, मैं डाक्टर वान बार्ले को एक बहुत ही भला और ईमानदार आदमी मानती हूं। अगर दुर्भाग्य से उन्हें ज़िन्दगी-भर जेल में रहना है तो इससे क्या होता है और फिर मुझे उम्मीद है कि सरकार इस मामले में ज़रूर न्याय करेंगे। अगर आप खुद विचार करेंगे तो आपको बार्ले निर्दोष मालूम पड़ेगा और आप अवश्य ही उसको छोड़ देंगे।"

राजकुमार ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप एक चिट्ठी लिखता रहा। चिट्ठी लिखकर उसने एक लिफाफे में बन्द की और उस पर अपनी मुहर लगा दी। फिर उसने अपनी सेना के एक उच्च अधिकारी को बुलाकर कहा, "कप्तान डेकेन, इस चिट्ठी को लेकर तुम तुरन्त लूवेंस्टीन के किले के लिए रवाना हो जाओ। वहां तुम किलेदार के पास जाना और इस चिट्ठी को पढ़कर सुना देना। इसमें मैंने कुछ आदेश लिखे हैं, जिनका तुरन्त पालन किया जाना चाहिए।"

चिट्ठी लेकर कप्तान तुरन्त वहां से रवाना हो गया। इसी कप्तान ने किले में पहुंचकर बार्ले को अपने साथ चलने के लिए कहा था। वह बंद घोड़ागाड़ी में बार्ले को बिठाकर राजकुमार के पास ले आया।

कप्तान को चिट्ठी देने के बाद राजकुमार वहां से जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। उसने चलते-चलते रोज़ा से कहा, "देखो, काले फूल के पौधे के सम्मान में परसों एक बड़ी दावत दी जाने वाली है। मैं जानता हूं कि वह दिन तुम्हारे लिए एक बहुत बड़ी खुशी का दिन होगा। इसलिए तुम दावत में ज़रूर आना।" यह कहकर राजकुमार वहां से चला गया।

: 13 :

15 मई, 1673 का दिन हार्लेम नगर के लिए एक बहुत ही महत्त्व का दिन था। इस दिन एक साथ तीन समारोहों का आयोजन किया गया था। पहला समारोह तो इस खुशी में हो रहा था कि काले फूल का पौधा पहली बार तैयार हुआ था और यह ऐसा मुश्किल काम था जिसे आज तक कोई पूरा नहीं कर सका था। दूसरी बड़ी बात यह थी कि समारोह में स्वयं राजकुमार विलियम उपस्थित होने वाले थे। इस समारोह की तीसरी विशेषता यह थी कि लोग दुनिया को और खासतौर से फ्रांस के शासकों को यह दिखाना चाहते थे कि युद्ध के बाद अब हालैंड अच्छी तरह संभल गया है।

एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया, जिसके बीच में सजी-सजाई सुनहरी पालकी चल रही थी। इस पालकी में काले फूल का पौधा रखा था।

राज्य के अध्यक्ष के रूप में राजकुमार विलियम स्वयं इस समारोह में उपस्थित थे और अपने हाथ से उस व्यक्ति को इनाम देने वाले थे, जिसने काले फूल के पौधे को तैयार करने में सफलता पाई थी। यह इनाम एक लाख गिल्डर (फ्रांस की मुद्रा) का था।

खूब धूमधाम के साथ जुलूस उस जगह पर पहुंचा जहां जलसा होने वाला था। यहां काफी बड़ी तादाद में लोग जमा थे। एक ऊंचे-से मंच पर कीमती कालीन बिछाए गए और काले फूल के पौधे को बड़े सम्मान के साथ मंच पर रखा गया। बाजे बजे और स्त्रियों ने गीत गाए। अभी राजकुमार के वहां आने में कुछ देर थी।

उधर हार्लेम की सड़कों से एक बन्द घोड़ागाड़ी गुज़र रही थी, जिसकी छोटी-सी खिड़की से बार्ले इस धूमधाम और सजावट को बड़े आश्चर्य से देख रहा था। उसके पूछने पर कप्तान ने उसे बताया कि काले फूल के सम्मान में आज इस नगर में जलसा हो रहा है।

बार्ले ने गाड़ी की खिड़की से गरदन निकालते हुए कहा, "काले फूल का पौधा ! क्या उसका फूल बिलकुल काला है ! कप्तान साहब, मैं आपके हाथ जोड़ता हूं, ज़रा मुझे इस पौधे को पास से देख लेने दीजिए।"

कप्तान बोला, "कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए हो ! यह क्यों भूल रहे हो कि तुम एक कैदी हो, तुमको आज़ादी नहीं दी जा सकती !"

"नहीं-नहीं, कप्तान साहब, इतनी मेहरबानी तो आपको करनी ही होगी। मैं वादा करता हूं कि पौधे को पास से देखकर मैं तुरन्त वापस लौट आऊंगा। मैं भागने की कोशिश नहीं करूंगा। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पौधा मेरा ही है ! इसे मैंने रोजा को उगाने के लिए दिया था। जब फूल तैयार हुआ तो एक आदमी उसको चुरा ले गया था। आप मुझको एक नज़र उसे देख लेने दीजिए।"

लेकिन कप्तान टस से मस नहीं हुआ। बार्ले गिड़गिड़ाता ही रहा। अचानक इसी बीच राजकुमार विलियम की सवारी उधर से आ निकली। जैसे ही राजकुमार की बग्घी बार्ले की गाड़ी के पास से गुज़रने लगी कि बार्ले ने गाड़ी की खिड़कती से गरदन निकालकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर राजकुमार से दया की भीख मांगनी शुरू की। राजकुमार की बग्घी रुक गई। उन्होंने उस कप्तान को भी पहचान लिया और उसको अपने पास बुलाकर मामले की पूछताछ की। कप्तान ने बताया, "सरकार, आपके हुक्म के मुताबिक मैं इस कैदी को लूवेंस्टीन के किले से ला रहा हूं। यह कैदी यहां कुछ देर रुककर जलसा देखना चाहता है।

इसका कहना है कि हो सकता है, काले फूल का यह पौधा वही हो जिसे इसने तैयार किया है और जो इसके पास से चुरा लिया गया है !"

राजकुमार ने कड़ी नज़र से बार्ले को देखते हुए कहा, "क्यों कप्तान, क्या इसी कैदी ने अभी हाल में जेल में बलवा किया था और जेलर की जान लेने की कोशिश की थी ? खैर, इसको पौधा देख लेने दो। मरने के पहले यह काले फूल का पौधा तो देख ले।" यह कहकर राजकुमार आगे बढ़ गया।

बार्ले को चार पहरेदार भीड़ में से होते हुए उस जगह ले गए जहां काले फूल का पौधा रखा था। मंच के सामने ही उसे खड़ा कर दिया गया। वहीं जेकब खड़ा था। उसकी नज़र एक लाख रुपये की गठरी पर थी और उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। जब बार्ले को पहरे में वहां लाया गया तो जेकब कुछ घबराया, लेकिन फिर व्यंग्य से हंसने लगा। उसने सोचा कि अब यह मेरा क्या कर लेगा ? इसको फांसी की सज़ा होने वाली है, क्योंकि इसने जेल में दंगा किया है। इनाम अब मुझको ही मिलेगा। लेकिन तभी उसकी नज़र रोज़ा पर पड़ गई जो स्त्रियों के झुंड में सबसे आगे थी और बहुत सजधज कर आई थी।

इसी बीच राजकुमार आकर अपने सिंहासन पर बैठ गया और पुष्प-प्रदर्शनी के अध्यक्ष ने अपना भाषण आरम्भ किया। भाषण समाप्त होने पर उसने कहा, "काले फूल के इस पौधे को एक लाख रुपया इनाम दिया जाएगा। अब वह आदमी आए जो पौधे का असली मालिक है।"

यह सुनते ही जेकब दौड़कर मंच पर चढ़ गया। लेकिन राजकुमार ने रोज़ा को मंच पर आने का इशारा किया और कहा, "रोज़ा, यह पौधा तुम्हारा ही है न ? तुम आगे आने में हिचक क्यों रही हो ? आओ और इनाम लो ! मैंने सारे मामले पर विचार किया है और जांच-पड़ताल से मुझे यही पता चला है कि पौधा तुम्हारा ही है।" फिर राजकुमार ने उपस्थित लोगों

की ओर मुड़कर कहा, "इस फूल का नाम इसको तैयार करने वाले रोज़ा और बार्ले के नाम पर 'रोज़ा बार्लेन्सिस' रखता हूं !"

इसके बाद राजकुमार ने बार्ले को भी मंच पर बुलाया और उसके हाथ में रोज़ा का हाथ रख दिया। बार्ले और रोज़ा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बार्ले तो आश्चर्य से राजकुमार की ओर देखता रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उधर जेकब चोर की तरह एक कोने में खड़ा था। उसकी तीसरी योजना धूल में मिल गयी थी। इस पूरी घटना का उसे इतना सदमा पहुंचा कि उसके दिल ने धड़कना बन्द कर दिया और वहीं गिरकर मर गया।

राजकुमार ने रोज़ा के हाथ में इनाम के रुपये रखते हुए कहा, "यह कहना बहुत मुश्किल है कि इस इनाम को तुम दोनों में से वास्तव में किसने जीता है। फिर भी मैं इसे रोज़ा को देता हूं, क्योंकि इसने बड़े साहस और लगन के साथ काम किया है और दिन-रात सेवा करके तैयार किया है। और बार्ले, तुम्हें रोज़ा को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि इसी ने सबूत इकट्ठा करके तुमको निर्दोष सिद्ध किया है। अब मुझे पता चल गया है कि तुमको गलती से सज़ा दी गई थी। तुमको आज से आज़ाद किया जाता है और तुम्हारी जो सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई थी, वह भी लौटा दी जाएगी। तुम्हारे चाचा कार्नेलियस-द-विट और उनके भाई के साथ भी अन्याय हुआ है। वे दोनों सच्चे देश-भक्त थे, लेकिन झूठे प्रचार और भ्रम के कारण जनता उनके खिलाफ हो गई थी और कुछ मूर्ख व्यक्तियों के हाथों वे दोनों मारे गए। मैं आज इस सभा में ऐलान करता हूं कि वे दोनों भाई भी बिलकुल निर्दोष थे और हालैण्ड के महान नागरिकों में से थे।"

जलसा खत्म होने के बाद रोज़ा और बार्ले तुरन्त वहां से अपने गांव के लिए रवाना हो गए। पहले तो रोज़ा के पिता ने बार्ले को अपना दामाद बनाना स्वीकार नहीं किया, लेकिन जब

उसे राजकुमार का हुक्म मालूम हुआ और यह पता चला कि बार्ले को गलती से सज़ा दी गई थी, तो वह खुशी-खुशी राज़ी हो गया और उसने बार्ले के साथ रोज़ा का विवाह कर दिया।

विवाह के बाद बार्ले ने अपना पूरा समय फूलों की खेती में लगा दिया। वह नई से नई किस्म के फल तैयार करने की धुन में लगा रहता था। उसके फूलों की मांग भी दिनोंदिन बढ़ने लगी और फूलों के विशेषज्ञ के रूप में उसका नाम चारों तरफ फैलने लगा।

मुद्रक : लक्ष्मी प्रिन्टइंडिया, दिल्ली-32

सरल बालोपयोगी कहानियां

बिन्दो का लड़का	शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय	15.00
आनन्दमठ	बंकिम चन्द्र	15.00
अक्ल बड़ी या भैंस	अमृतलाल नागर	12.00
नटखट चाची	अमृतलाल नागर	12.00
मैत्री के फूल	सं० जयप्रकाश भारती	15.00
झिलमिल कथाएं	सं० जयप्रकाश भारती	25.00
अच्छे बच्चे, अच्छे नागरिक	महेन्द्र कुलश्रेष्ठ	6.00
सागर का घोड़ा	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	10.00
शीशमहल की राजकुमारी	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	12.00
सक्का और शेरा	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	10.00
खजाने का चोर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	10.00
सूरजपंखी चिड़िया	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	10.00
शेर बड़ा या मोर	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	12.00
बुद्धि का चमत्कार (पुरस्कृत)	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	10.00
बिना विचारे जो करे	डॉ० भगवतशरण उपाध्याय	12.00
भालूवाला	विमल मित्र	16.00
सूखा गुलाब	शिवानी	15.00
राधिका सुन्दरी	शिवानी	12.00
स्वामिभक्त चूहा	शिवानी	12.00
पारस	सुदर्शन	10.00
फूलों का गुच्छा	सुदर्शन	8.00
खेलघर (बाल एकांकी)	शीला गुजराल	12.00
परियों के देश में	डॉ० भगवतीशरण मिश्र	10.00
साहस के पुतले	विश्वनाथ	10.00
महाकवि कालिदास के नाटक	जगदीश दीक्षित आनन्द	10.00
अलीबाबा और चालीस चोर	जगदीश दीक्षित आनन्द	12.00
मानव की कहानी	राहुल सांकृत्यायन	10.00
आदमी (पुरस्कृत)	मोहम्मद खलीक	10.00
सरल पंचतंत्र (पुरस्कृत)	विष्णु शर्मा	12.00

सरल हितोपदेश (पुरस्कृत)	नारायण पंडित	15.00
सूझबूझ की कहानियां	आनन्द कुमार	12.00
बीरबल की कहानियां	आनन्द कुमार	12.00
चोर पकड़ा गया	आनन्द कुमार	12.00
सदाचार की कथाएं	आनन्द कुमार	15.00
आदर्श कथाएं	आनन्द कुमार	10.00
लोक कथाएं	आनन्द कुमार	10.00
महापुरुषों की कथाएं	आनन्द कुमार	12.00
जातक कथाएं	आनन्द कुमार	12.00
नीति कथाएं	आनन्द कुमार	12.00
भारत भूमि और लोग	भगवतशरण उपाध्याय	10.00
बचपन की याद रही कहानियां	सं. हिमांशु जोशी	15.00
राजा की बेटी	मधुकर सिंह	12.00
शाबास श्यामू	डा० श्रीप्रसाद	15.00
सूरज का खेल	जयप्रकाश भारती	15.00
एक थाल मोतियों भरा	जयप्रकाश भारती	15.00
हमारे खेल	सुरेन्द्रनाथ सक्सेना	10.00
जंगल के जीव	विराज एम० ए०	10.00
स्वतन्त्रता संग्राम की कहानी	प्राणनाथ वानप्रस्थी	10.00
सरल महाभारत	प्राणनाथ वानप्रस्थी	15.00
अच्छे बनो	प्राणनाथ वानप्रस्थी	8.00
सरल रामायण	सत्यकाम विद्यालंकार	12.00
हमारी सांस्कृतिक विरासत	धर्मपाल शास्त्री	15.00
सिन्दबाद की कहानी	धर्मपाल शास्त्री	12.00
हमारे त्यौहार	धर्मपाल शास्त्री	12.00
हम एक हैं (पुरस्कृत)	धर्मपाल शास्त्री	15.00
अच्छी आदतें	आचार्य चतुरसेन	10.00
आओ सरकस देखें	प्रकाश पंडित	10.00
चिड़ियाघर	प्रकाश पंडित	12.00
अकबर बीरबल	सतीश कुमार	10.00
बीरबल की चतुराई	श्रीकान्त	12.00
शकुन्तला	अवनीन्द्रनाथ ठाकुर	10.00

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक	धर्मपाल शास्त्री	15.00
हमारा संविधान	धर्मपाल शास्त्री	12.00

बहुरंगी बालोपयोगी कविताएं

अन्धेर नगरी	सोहनलाल द्विवेदी	12.00
सुनो कहानी	सोहनलाल द्विवेदी	10.00
हुआ सवेरा उठो-उठो	सोहनलाल द्विवेदी	10.00
हम बालवीर	सोहनलाल द्विवेदी	10.00
बंदर बांट	बच्चन	10.00
नीली चिड़िया	बच्चन	10.00
जन्मदिन की भेंट (पुरस्कृत)	बच्चन	10.00
निंदिया आ जा	अमृतलाल नागर	10.00
कहावतों के गीत	रत्नप्रकाश 'शील'	10.00
चाचा नेहरू	विष्णुकान्त पाण्डेय	10.00
बच्चों के बापू	धर्मपाल शास्त्री	10.00
आओ मिलकर गायें	धर्मपाल शास्त्री	10.00
अगर-मगर	निरंकारदेव सेवक	10.00
आओ करें सवारी (पुरस्कृत)	रामचन्द्र तिवारी	8.00
अपना देश (पुरस्कृत)	रामचन्द्र तिवारी	15.00
यह धरती बलिदान की	राष्ट्रबन्धु	12.00
फूल खिले हैं डाली-डाली (पुरस्कृत)	रुद्रदत्त मिश्र	12.00
बटोही और हंस	रामवचन सिंह 'आनन्द'	7.00
हमारे पक्षी (पुरस्कृत)	रुद्रदत्त मिश्र	10.00
खेलें कूदें नाचें गायें (पुरस्कृत)	धर्मपाल शास्त्री	10.00
मीठे-मीठे गीत	श्रीप्रसाद	10.00
विजय गीत	डॉ० शोभनाथ पाठक	10.00
प्रेरक बालगीत	विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'	12.00
फुलवारी	विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'	10.00
आजादी के गीत	निरंकारदेव सेवक	10.00
सुनाओ नानी एक कहानी (पुरस्कृत)	धर्मपाल गुप्ता	10.00

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमारखां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर
(Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा
(20 Thousand Leagues under the Sea)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं
(The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)

शिक्षा भारती